

राजस्थानी वीर-गीत

भाग १ - मूलपाठ



अनूप संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर

सं० २००२

PRINTED AND PUBLISHED BY LALIT SRI RAM
SUPERINTENDENT,
AT THE GOVERNMENT PRESS, BIKANER

आसिका

०

मुरघर में नव जीवण उमगै,
रस उगळै सादळ-धरा ।
गादीजै जंगळ में मगळ,
धण परताप गगावत रा ॥

जुग-जुग जीवौ जै जगळघर,
कोद दिवाळ्या राज करौ ।
करणी अमर करौ मा करणी,
भगवंत सुख भडार भरौ ॥

संपादकीय निवेदन

वीकानेर का राज-परिवार आरंभ से ही सरस्वती का समा-
राधक और साहित्य का संरक्षक रहा है। वीकानेर के नरेशों ने अनेकों
सु-कवियों और सुलेखकों को आश्रय देकर सरस्वती के भंडार की
श्री वृद्धि की। वीकानेर का राजकीय हस्तलिखित पुस्तकालय भारत-
वर्ष के प्रमुख पुस्तकालयों में से है। उस में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश,
राजस्थानी, ब्रजभाषा, सड़ीशेली, फारसी आदि अनेक भाषाओं के
अमूल्य ग्रंथों का संग्रह है जिन में से कई-धोक अन्यत्र अलभ्य हैं।

वीकानेर-नरेशों में अनेक स्वयं भी अच्छे लेखक हुए। उन की
कृतियां आज भी वीकानेर के राजकीय पुस्तकालय की शोभा बढ़ा
रही हैं।

इस पुस्तकालय के अधिकांश ग्रंथ महाराजा अनूपसिंहजी के
समय में संगृहीत हुए। 'यह समय हिन्दुओं के लिखे बड़े संकट का
था। बादशाह औरंगजेब की कट्टरता यहां तक बढ़ गयी थी कि उस
की दक्षिण की चढ़ाईयों के समय वहां के ब्राह्मणों को अपनी पुस्तकें
भष्ट किये जाने का भय रहता था। मुसलमानों के हाथ से अपनी
पुस्तकें भष्ट किये जाने की अपेक्षा वे कभी-कभी उन्हें नदियों में बहा
देना श्रेयस्कर समझते थे। संस्कृत-ग्रंथों के इस प्रकार नष्ट किये
जाने से हिन्दू संस्कृति के नाश हो जाने की पूरी आशंका थी। ऐसी
दशा में धीरे धीरे विद्यालुभागी महाराजा अनूपसिंह ने उन ब्राह्मणों
को प्रचुर धन दे-देकर उन से पुस्तकें खरीद कर वीकानेर के सु-
रक्षित दुर्ग-स्थित पुस्तक भंडार में भिजवानी प्रारंभ कर दीं। यह
कहने की आवश्यकता नहीं कि उक्त पुस्तकालय में ऐसे-ऐसे बहु-
मूल्य ग्रंथ अभी तक सुरक्षित हैं जिन का अन्यत्र मिलना कठिन है।'

इतना महत्त्वपूर्ण होते हुए भी यह पुस्तकालय बाहर के विद्व-
त्समाज के लिखे बहुत-कुछ रहस्यमय ही रहा। भूतपूर्व वीकानेर-
नरेश परमप्रतापी महाराजा धीरंगासिंहजीने अपने स्वर्ण-महोत्सव के
अवसर पर पुस्तकालय की नवीन व्यवस्था का आदेश दिया। पुस्तका-
लय प्रधानतया अनूप महाराजा पसिंहजी की ही कृति था अतः पुस्तका-

लय का नामकरण अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय किया गया और वह सब विद्वानों के लिखे खुला घोषित कर दिया गया। साथ ही संस्कृत के महत्वपूर्ण ग्रंथों के प्रकाशन के लिखे श्री गंगा प्राच्य ग्रंथमाला The Ganga Oriental Series की स्थापना की गयी।

पुस्तकालय में संस्कृत के अतिरिक्त राजस्थानी और हिन्दी के ग्रंथों का भी विशाल संग्रह है जिन में अनेक अन्यत्र अलभ्य तथा अधिकांश अप्रकाशित हैं। इन के प्रकाशन की व्यवस्था भी नितान्त आवश्यक थी। सुयोग्य पिता के सुयोग्यतम पुत्र वर्तमान वीकानेर-नरेश महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर ने अपने सिंहासनारोहण के साथ श्री सादूल प्राच्य ग्रंथमाला की योजना करके इस आवश्यकता की भी पूर्ति कर दी।

श्रीमान् का मातृ भाषा-प्रेम सर्वथा अभिनन्दनीय और अनुकरणीय है। मातृभाषा की ओर आरम्भ से ही आप का ध्यान रहा है। महाराजा अनूपसिंहजी की भांति युवराज्य काल से ही मातृभाषा के लेखक और कवि आप से आश्रय प्राप्त करते रहे हैं। इस ग्रंथमाला की स्थापना आप के मातृभाषा प्रेम का नवीनतम प्रत्यक्ष प्रमाण है। पूर्ण आशा है कि आप की कृपलया में राजस्थानी अपने उस प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त करने में समर्थ होगी।

मातृभाषा राजस्थानी के साथ-साथ आप राष्ट्रभाषा हिन्दी के भी परम प्रेमी हैं। आप ने जाना दी है कि हिन्दी के महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन भी इस ग्रंथमाला में किया जाय।

ग्रंथमाला का समर्पण ग्रंथ गीतमंजरी गतवर्ष श्रीमान् की वर्ष-गांठ के शुभ अवसर के उपलक्ष्य में प्रकाशित हुआ था। अब उस का प्रथम ग्रंथ राजस्थानी वीरगीत, प्रथम भाग, पाठकों के करकमलों में उपस्थित किया जाना है। द्वितीय भाग, जिस में इन गीतों का नायानुवाद, प्रस्तावना, शब्दकोष आदि होंगे, तय्यार हो रहा है और शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

सूचनिका

	पृष्ठ-संख्या
१. प्राक्कथन (डाक्टर सी. कुञ्जन् राजा)	[थ]
२. भूमिका	[प]
३. राजस्थानी वीर-गीत	१

[१] सामान्य गीत

(१) गीत-प्रशंसा	३
(२) क्षत्रिय-प्रशंसा	४
(३) क्षत्रिय-संतान-प्रशंसा	५
(४) वीर-प्रशंसा	६
त्याग-प्रशंसा	७

[२] विशेष वीर रा गीत

(५) बादल छाया फूलार्ण रौ	६
(६) राठौड़ पायू धांधळीत रौ	१०
(७) " " " "	११
(८) राठौड़ भरदा घुडावत रौ	१५
(९) महाराणा हमीर अदसियात रौ	१६
(१०) राठौड़ राय सखसा तीहायत रौ	१७
(११) " राय महीनाय सखसायत रौ	१८
(१२) " जैतमाख सखसायत रौ	१९
(१३) " राय चूडा घीमदेयीत रौ	२०
(१४) " राय रिद्धमल चूडावत रौ	२१
(१५) " " " "	२२
(१६) सीसोदिया चूडा खारायत रौ	२३
(१७) महाराणा फूमा मोकळीत रौ	२४
(१८) " " " "	२५
(१९) राठौड़ राय जोधा रिद्धमलीत रौ	२६
(२०) " कांधळ रिद्धमलीत रौ	२७
(२१) " सरबदिया जैसा बपाटीत रौ	२८

(२२) राठौड़ राय धीका जोधावत री	...	२९
(२३) " "		३०
(२४) " धीदा जोधावत री	...	३१
(२५) " दूदा जोधावत री	..	३२
(२६) महाराणा रायमख कुंभकरणीत री	..	३३
(२७) राठौड़ महाराज अरैराजौत री	...	३४
(२८) महाराणा सांगा रायमलीत री		३५
(२९) " "	...	३६
(३०) " "	.	३७
(३१) " "	...	३८
(३२) " "		३९
(३३) भाळा बजा राजधरीत री	...	४०
(३४) यादव गहड़ हमीरीत री	...	४१
(३५) राठौड़ सेखा सुजावत नै गांगा बाघावत री		४२
(३६) " राव जैतसी लूणाकरणीत री	.	४३
(३७) " भोजराज सादावत रूपावत री	..	४४
(३८) सांभला महेस कल्याणमजौत री	...	४५
(३९) " "	...	४६
(४०) " "		४७
(४१) वाढेख सिखा री	..	४८
(४२) सरगहिया बीजा दूदावत री	..	४९
(४३) " "	...	५०
(४४) " करण धीजावत री	...	५१
(४५) जाम रावळ लाखावत री	...	५२
(४६) " "	.	५३
(४७) " "	..	५४
(४८) x x
(४९) जादेचा जसा दरघमळौत री	...	५८
(५०) भाळा रायसिंघ मानसिंघौत री	...	५९
(५१) चौदाण जगमाल जैसिंघेघौत री	...	६०
(५२) पमार पंचापण री	..	६१
(५३) राठौड़ त्रेयीदास जैतावत री	...	६२
(५४) " प्रिधीराज जैतावत री	...	६३

(८६)	राठौड़ किसनसिंघ रायसिंघाँत रौ	६७
(८७)	कछवाहा घैरसल भंगारीत रौ	...	६८
(८८)	" "	६९
(८९)	" "		१००
(९०)	" केसरीसिंघ घैरसलौत रौ		१०१
(९१)	महाराणा करणसिंघ अमरसिंघाँत रौ		१०२
(९२)	" जगतसिंघ करणसिंघाँत रौ	...	१०३
(९३)	सीसीदिया दळपत सगतावत रौ	...	१०४
(९४)	राठौड़ राध अमरसिंघ गजसिंघाँत रौ	.	१०५
(९५)	" "	...	१०६
(९६)	" "	...	१०७
(९७)	" "	...	१०८
(९८)	" "	...	१०९
(९९)	" "	...	११०
(१००)	राठौड़ बळ गोपालदासाँत चांपावत रौ	.	१११
(१०१)	" "	...	११२
(१०२)	" "	...	११३
(१०३)	" "	...	११४
(१०४)	" गोकळदास मनोहरदासाँत चांपा- वत रौ	..	११५
(१०५)	गौड अरजण वीठलदासाँत रौ	...	११६
(१०६)	कछवाहा महाराजा जैसिंघ महासिंघाँत रौ		११७
(१०७)	कछवाही किसनावती रौ	...	११८
(१०८)	" "	..	११९
(१०९)	चौहाण सादुळ सामंतसीदाँत रौ	..	१२०
(११०)	राठौड़ महाराजा करणसिंघ सूरसिंघाँत रौ		१२१
(१११)	राठौड़ रतन महेसदासाँत रौ	.	१२३
(११२)	हाडा राध सत्रसाब गोपीनाथौत रौ	...	१२४
(११३)	राठौड़ महाराजा जसवन्तसिंघ गज- सिंघाँत रौ	...	१२५
(११४)	" "	...	१२६
(११५)	हाडी राणी जसमादे रौ	...	१२७
(११६)	भादी प्रतापसिंघ सूरतायाँत रौ	...	१२८

(११७) महाराणा राजसिंघ जगतसिंघौत रौ ...	१२६
(११८) " " ...	१३१
(११९) " " ...	१३२
(१२०) चारण सौदा नरा अमरावत रौ ...	१३४
(१२१) भोसळा राजा सिवाजी साहजीयौत रौ	१३५
(१२२) राठोड दुरगादास नै सोनेंग चांपावत रौ	१३६
(१२३) " महाराजा अनुपसिंघ करण- सिंघौत रौ ...	१३७
(१२४) " पदमसिंघ करणसिंघौत रौ ...	१३८
(१२५) " " ...	१३९
(१२६) चौधरी गोपंददास मूळाणी रौ ...	१४०
(१२७) राठोड उदैसिंघ हरनाथौत करमसिंघौत रौ	१४१
(१२८) चौहाण धीठलदास अचळायत रौ ...	१४२
(१२९) " " ...	१४३
(१३०) " नाहरखान किसनशासीत रौ...	१४४
(१३१) कळवाहा सुजाणसिंघ स्यामसिंघौत रौ	१४५
(१३२) मूँघडा जसरूप रौ ...	१४६
(१३३) राठोड लालसिंघ बटुली - ठाकर रौ ...	१४७

[३] अज्ञात समेवाळा बीरो रा गीत

(१३४) सोळा खंगार रौ ...	१४९
(१३५) सींधल खंगार रायपालौत रौ ...	१५०
(१३६) सोळंकी जैचन्द्र रौ ...	१५१
(१३७) दौलतखान नारायणदासीत रौ ...	१५२
(१३८) भाटी दौलतसिंघ सुरताणौत रौ ...	१५३
(१३९) भाटी बदरीसिंघ नै अनोपसिंघ पिराग- दासीत रौ ...	१५४
(१४०) राठोड मानसिंघ नै वैणीदास रौ ...	१५५
(१४१) पडिहार राजसी रौ ...	१५६
(१४२) मैणा सांगा रौ ..	१५७
(१४३) निरवाण सीदा रौ ...	१५८
(१४४) राठोड हरपाल देवराजौत रौ ...	१५९
(१४५) " हरीराम ऊदड़ रौ ...	१६१

अनुपूर्ति-गीत

(१४६) महाराजा सावुळसिंघजी रौ	...	१६३
४. अनुक्रमणिका . .		१६५
(१) प्रतीकानुक्रमणिका	१६५
(२) धीर-नामानुक्रमणिका	१७१
(३) धीर-जाति-नामानुक्रमणिका .	.	१७५
(४) कवि-नामानुक्रमणिका	१७७

FOREWORD

It is a matter of sincere gratification that within a few months after the publication of *Gīt Manjarī* as the Dedicatory Volume in the Series bearing the name of His Highness the Maharaja of Bikaner, it has been possible for the Anup Sanskrit Library to bring out this *Vir Gīt* as the first volume in the Series. The arrangements for printing the Dedicatory volume were made during my stay in Bikaner in the summer of 1944. Now when I visit Bikaner in the summer of 1945 the first volume is also ready and the second part of this work is getting ready as the next number in the Series.

This volume contains 145 songs in Rajasthani. As the name implies, these are songs of heroism. The songs are divided into three groups: 1 to 4, 5 to 133 and 134 to 145. In the first group the subject matter is of a general nature. In the second group there are songs about individual heroes, whose date could be ascertained. These 129 songs are arranged in chronological order. They start from the twelfth century and come up to recent times. In the third group are included songs whose dates could not be ascertained and they are arranged in the alphabetical order of the name of the heroes. Besides their artistic value as literature, these songs, belonging to various periods, will be of great help in studying the development of Rajasthani language.

I have always held on to the view that the literatures of Modern Indian languages and Sanskrit literature form a harmonious unit representative of Indian

culture and that they are mutually complementary. Sanskrit was, for many centuries, the medium for the expression of India's intellect and imagination. During the last one thousand years Indian poetry found expression through the various languages that grew up in the different parts of India. But the Vedas and the Puranas still continue to inspire the nation and to mould the life of the nation. The thoughts found in the literatures of the different languages are continuations and natural developments of the thoughts found in Sanskrit and Sanskrit unified the various languages into a cultural whole resisting the possible tendency of disintegration.

It is unfortunate that in recent times there is a new tendency developing to regard the various literatures as having mutually conflicting interests. The studies of these literatures are neglected in the school and university education, and ignorance comes to the aid of prejudices. The only way in which this tendency towards disruption could be arrested is to develop a taste for Indian literatures and to enable the people of the country to understand the cultural values of their literatures. When understanding displaces ignorance, sympathy will take the place of prejudices and people will find that there can be no conflict of interest between different literatures. The poets looked upon man and the world from the same angle, the difference is only in the medium, namely, the language. Every one who understands the real beauties of literary art knows also that there cannot be any more conflict between two literatures than there can be between two forms

of art, say, painting and sculpture. Literature, like any other art, ultimately deals with man and belongs to man, to whatever language it belongs primarily.

The subject matter dealt with in these songs is just the subject matter that has been dealt with in the various strata of Sanskrit Literature from its earliest times, namely, the Vedic period. The hymns of the Rigveda are songs of heroism. Ramayana and Mahabharata are songs of heroism. The poets like Kalidasa, Bharavi, Magha and Sri Harsa sing of heroism. Sanskrit dramas depict heroism. Man's physical might is in modern times condemned as a sin, while the religion of our forefathers exalted it as the defender of man's highest goal. There was according to them perfect harmony between the Self of man and the body of man, and they were mutually complementary in origination, in function and in goal. The songs presented in this volume truly reflect the religion of our forefathers, a religion which alone can restore to us the position which once was ours.

When I visited Bikaner just over five years ago to prepare a list of the Sanskrit manuscripts in the Library as a part of my work in the Madras University in editing the New Catalogus Catalogorum of Sanskrit Manuscripts, little did I dream that the very humble beginning which I started then would be the foundation on which would be erected such a mighty structure. Bikaner had been a centre of learning for a long time. I had to create nothing. I had only to use a piece of cloth and remove the dust on the surface, and the mirror starts reflecting all the glory of the place. To change the metaphor,

I may say that I had only to remove the curtain and the glorious characters of ancient days, the kings and the ministers and the scholars, are there on the stage I consider it my greatest privilege in life to be the stage-boy pulling the curtain strings in this great drama

The present volume contains only the text The Translation in Hindi, Notes, Glossary, detailed Introduction and such other material that will help the reader to better understand and appreciate the work, will form the second part and will be published at an early date

The matter that appeared in the Dedicatory volume was quite appropriate in inaugurating a Series from Bikaner, and I am sure that the readers will readily agree that the material presented here is equally appropriate in the first volume of the Series that bears the name of His Highness the Maharaja of Bikaner

Pandit Sri Ram, the Superintendent of the Government Press, Bikaner deserves both thanks and congratulations for bringing out the volume so expeditiously and at the same time so neatly

BIKANER }
16th May, 1945 }

C KUNHAN RAJA

भूमिका

श्री सादृष्ट प्राच्य ग्रंथमाला रो पैलो ग्रंथ 'राजस्थानी वीर-गीत' पाठकां रै हाथां में राखतां घणो हरख हुवै है. इण में राजस्थानी (डिंगल) भाषा रा १४५ वीर-गीत हैं. आरंभ में च्यार प्रस्ताविक गीत है जकां में अेक मे गीत रो प्रशंसा तथा बाकी तीन में वीर और वीरना रो सामान्य प्रशंसा है. आगे १०० विशेष वीरां रा १४१ गीत हैं. वीर वीरुं तरां रा है-युद्धवीर भी और दानवीर भी. घणा सा वीरां रो समै हात है पण कई इसा भी है जकां रो समै का तो सर्वथा अहात है का निश्चित रूप सू हात कोनी. इसा वीरां रा गीत अंत में न्यारै विभाग में दिया है. उपसंहार में ग्रंथमाला रा संस्थापक धर्म-मान धीकानेर-नरेण रो भी अेक गीत दियो है.

घणकरा वीर राजस्थान रा है पण कई-अेक काठियावाड़ और कच्छ रा भी है. इण देसां रो राजस्थान रै साथै सदा सूं घनिष्ठ संबंध रह्यो है. अेक गीत मराठा वीर शिवाजी रो है.

घणा गीतां रा कवियां रो पतो कोनी. जकां रो पतो लाग्यो उणां रा नाव गीतां रै साथै दे दिया है. कवियां में कई चारण है, कई चारणेतार. चारणेतारां में भाट, भोजक, राजपूत, ब्राह्मण और जैन साधु हैं. शिवाजी आळो गीत अेक जैन साधु री रचना है. चारण कवियां में घणो महत्त्वपूर्ण नांव बारठ ईसरदास रो और चारणेतारां में प्रथीराज राठौड़ रो है.

घणा सा गीत समकालीन कवियां रा वणायोड़ा है पण कई अेक, विशेष कर प्राचीन वीरां रा गीत, पहुँ वणियोड़ा है पावूजी रा गीत उगाणीसर्वे-र सर्वे सईका री रचना है. लाखा फूलाणी रो गीत भी विशेष पुराणो कोनी दीसै कई गीतां रो भाषा बदलीजगी ॥ जिण सूं ये नवीन लगै, उदाहरणार्थ महाराणा हम्मीर रो गीत.

डिंगल वीर-गीत दो भांत रा है, अेक जकां रो महत्त्व ऐतिहासिक है और दूसरा जकां रो महत्त्व साहित्यिक है. इण ग्रंथ में पछ्हीतरां

रा गीत ही प्राय कर लिया है. घणां गीतां मे Conscious art की भांकी मिलती.

इस गीतां के संबंध मे दो बातों विशेष कर ध्यान मे राखण जितनी है, श्रेक तो आ के गीत नाम हुता थकां भी अं गावण की चीजां कोनी, इणां की रचना गावण वास्तै कोनी हुई ही और ना अं गायीजता हा. अं तो श्रेक विशेष लै सू बोलीजता हा. गीत राजस्थानी छंद-शास्त्र में पद्य-रचना की श्रेक पारिभाषिक संज्ञा है.

ध्यान में राखण की दूजी बात आ है कै श्रेक गीत में प्रायः कर (पण सदा नहीं) श्रेक ही भाव हुं जको गीत के पैलड़े दोहलै में फहीजै. आगे रा दोहलां में यो ही भाव प्रकारांतर सू छापीज कवि साधारण हुयो तो पछला दोहलां में पैलड़े दोहलै के भाव की शब्दांतर मान करनै राख देसी पण प्रतिभाशाली हुयो तो ईस अनोपे ढंग सू, यकता के साथै, कैसी के सहसा पुनरावृत्ति को प्रतीत हुं नी.

गीतां की संकलन नीचे बताया आचार्य सू करीज्यो हैं—

(क) अप्रकाशित—

(१) अनुप संस्कृत पुस्तकालय की नीचे लिपी हस्त लिखित पोथियां:—

१. गीत-संग्रह नं० ६
२. गीत-संग्रह नं० ८
३. गीत-संग्रह नं० २१
४. जसरत्नाकर
५. दयालदास की ख्यात

(२) श्रीयुत अजरचन्द नादटा के भंडार की श्रेक हस्त-लिखित पोथी.

(ग) प्रकाशित—

१. डाकुर भूरसिंह — महाशय्या-जस-प्रमाण
२. " — विविध संग्रह
३. बांकीदास ग्रंथायली, भाग ३
४. राजस्थान प्रेमालोक, भाग १ तथा २.

गीतां रो पाठ निश्चित करण में घण्टी कठनाई हुई. हस्तलिखित पोथियां में पाठ री अशुद्धियां जागां-जागां दीखी. पाठान्तरां री भर-मार रो तो कैणो ही कोई ! जिन्ही पोथियां बित्तई पाठ. इण ग्रंथ में अर्थ देखतां जको पाठ ठीक मालूम हुयो वो लियो है. जठे साफ लेखक री अशुद्धि मालूम हुयो यठे संशोधन कर दियो है. छंद रै अनुसंध सं गुरु नै लघु अथवा लघु नै गुरु भी घण्टी जाग्यां करणो पड़रो है. राजस्थानी में व और व न्यारी-न्यारी धनियां है पण प्रेस में व रो टाइप नहीं हुऐ सं दोनों रो काम व सं ही लियो है.

गीतां नै विना अर्थ रै व्याख्या व्यर्थ है ओ समझ नै, आपणी अयोग्यता नै जाणतां थकां भी, साथै अर्थ देखण रो प्रयास करयो है (अर्थ दूसरे भाग में है). राजस्थानी भाषा रै पुराणै साहित्य रो अर्थ बतावणवाला विद्वानां रो अत्यन्ताभाव तो कोनी पण वै दुरलभ जरूर है और आज इसा साधन भी कोनी जकां रो सायता सं कोई राजस्थानी साहित्य रै दुर्गम धन में प्रवेश करण रो साहस करे सर्वांगपूर्ण तो आघो रह्यो, कोई छोटी मोटी काम-चलाऊ कोथ भी आज उपलब्ध कोनी. भाषाविज्ञान और पुराणी तथा पड़ोसी भाषां रै तुलनात्मक ज्ञान रै सहारै ही थोड़ी-घण्टी गति हुयै तो हुयै. संकलनकर्त्ता भाड़-भंटाड़ां नै बाढ़नै ओक काम-चलाऊ मारग मात्र तयार करयो है. हाल उण रा कांटा पूरी तरां सं साफ नहीं हुया है, पण वो विशा-सूचन रो काम कर सकसी. आषा है सुयोग्य विद्वानां नै राजमार्ग तयार करतां घण्टी धार फो लागै नी.

अज्ञान और विस्मृति रै अंधकार में पड़ी राजस्थानी री अण-मोल साहित्य-निधि नै प्रकाश में लावण रो पथ प्रयत्न कर नै विद्या-प्रेमी और सद्गुणग्राही वोकानेर-नरेय महाराजा श्री सादूलसिंहजी पहाडुर मातृभूमि और मातृभाषा रो जको मोटी उपहार करयो है उण रै वास्ते विद्वत्समाज उणां रो चिर-कृतज्ञ रैसी. इण मौके रो लाभ लेनै संकलनकर्त्ता भी आप री हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करै है.

वोकानेर राज रा साहित्यानुगामी प्रधान-मंत्री श्रीयुत फ. मा. पण्डितकर री रुपा सं इण ग्रंथ नै ओ सादूल प्राच्य ग्रंथमाला रो प्रथम ग्रंथ हुयण रो गौरव प्राप्त हुयो इण वास्ते, तथा उणां सं जको

प्रोत्साहन निरंतर मिलतो रह्यो उण घास्तै, संकलनकर्त्ता उणां रो हृदय सँ आभारी हँ.

अनूप संस्कृत पुस्तकालय रा अवैतनिक सलाकार तथा मद्रास विश्वविद्यालय रँ संस्कृत विभाग रा प्रधान डाक्टर सी. कुञ्जन् राजा अेम अे, डी. फिल्, सँ घणी दिवाघांमें पय-प्रदर्शण और प्रोत्साहन प्राप्त हुयो डाक्टर दशरथ शर्मा अेम. अे., डी जिद्, हिंदी नही जाणन 'वाळा पाठकां रँ घास्तै अंग्रेजी में अेक सारगर्भित प्रस्तावना लिख देघण रो कृपा करी. अनूप संस्कृत पुस्तकालय रा क्यूरेटर श्रीयुत के. माधव कृष्ण शर्मा पुस्तकालय सँरंधी सगळी सुविधाघां कर देघण रो उदारता दर्नायी राजस्थान रा विख्यात अनुसंधान-कर्त्ता विद्वान श्रीयुत अगरचन्द नाहटा सँ अेक प्राचीन गीत संग्रह मिल्यो जकें में घणा महत्वपूर्ण गीत लाधा. अैस रा अग्यक्ष श्रीयुत प० श्रीराम शर्मा ग्रंथ रो रूपाई में यरायर रस लियो. आं सारां ही सज्जनां रो संकलनकर्त्ता घणो अनुगृहीत हँ.

ग्रंथ में घणी झुटियां हँ पण गुणग्राही विद्वान आपणी उदारता सँ उण ने निभा लेसी.

—संकलनकर्त्ता

.राजस्थानी वीर-गीत

राजस्थानी वीर-गीत

[१]

गीत १

गीत-प्रशंसा

१

कली सेत मन पालटै, पढ़ै जोखिम कलस,
पसै खुंभी, हुचै मंडप खांगौ ।
भीतदा भाजि दहि जाइ धरती मिलै,
गीतदा नह जाय, कहै गांगौ ॥

२

बाघउत ऊचरै, सुणौ खड्-तीस वंस,
जुरा आगलि रहै धड़ जाहीं ।
भोज पीकम तणी सुजस सारै भुपया,
नरा, तिण्य वार रा मंडप नाहीं ॥

३

हुचै विमह दहै, कहै चूंडाहरौ,
इंद्र पारक पवण प्रिसण्य भेता ।
महिमंडल भीतदा फोन सुं भीदता,
कली पालड हुचै, जाहि केता ॥

४

महल चौधार अवचां तणा माळियां
दिनै घोलीजत जुरा दहसी ।
मंडल धू सथिर, अहराव सिर मेदणी,
राय गांगौ कहै, त्यां गीत रहसी ॥

राजस्थानी वीर-गीत

गीत २

चनिय प्रशंसा

१

बावन नै बळी त्यागियो सरवस,
दधिच अंगां रा हाड दिये ।
सयांत करे, खत्रियां जस खातर
कुण कुण कठिन उपाय किये ॥

२

ग्राळे दियो मांस सिवी तन,
धु करवत धज-मोर धरी ।
अत रजपूतां सु जस पियारौ,
जिण कारण सै अजर जरी ॥

३

पाइ हथां क्रन दांत आपिया,
रिख नै बेटा अघघ-नरेस ।
इण कारण धीरत आधरियो,
दहसोतां मुसकल ओ वेस ॥

४

नीर भरयो हरिचंद ग्रिह नीचै,
गात सरा बिइ रह्यौ गंगेय ।
जोयी, लियो घणौ मूघौ जस,
दियो फाट माथौ जगदेय ।

५

मदि सूर्य दातारं मांहे,
करि-करि रूपग पात कहै ।
जस रहियो अस्त्रियात जुगे जुग,
रहै घात, नह गात रदै ॥

गीत ३

चनिय-सन्तान-प्रशंसा

१

इम छत्रियां तणा वैत विहुं आला,
भूँडइ कळू न कीच भरइ ।
कंवरे सिनान करइ किरमाळां,
कंवरी आळां ग्हाण करइ ॥

२

राजपूतां जामण दुहुं रुडा,
घप जां रह नह फळ वसर ।
सारं धार घसर सगमुण सुत,
धार अंगारां सुता घसर ॥

३

हर राजवियां जाय विगहे हव,
कळू कीच मांहे न फळइ ।
विजडां धार छडइ चढि घेटा,
वेटी काठां चढे बळइ ॥

४

स्याम-धरम पति-व्रत अति साधइ,
अंग आराण आसगर आगि ।
छु जि मिलि जाइ जोत हुंतां सग
सोदां महुं छाफडां खागि ॥

गीत ४

वीर-प्रशंसा

१

कहै फंथ नूं दुइं कुल उजली कामणी,
यलां फौजां मिलै, छाग धागे ।
मानसी तिकां नूं जिके भइ नीसरै,
छारला वंस नूं गाल छागे ॥

२

सूरमा जिके रजपूत भावध सजे
लोह मिल्यै मनां सुजस लोभा ।
कनक-आभूषणां सोहजै कामणी,
सूर आभूषणां धाय सोभा ॥

३

साम रा काम नूं घसै दळ सामुदा
केवियां पछाड़ण फनै करणै ।
साबता रहषां निज सुजस फानां सुरण,
प्राण छटां पछै सती परणै ॥

त्याग-प्रशंसा

दृष्ट

जग दिशियर पाखै जिसौ अंधारौ अदबाह ।
दीपै खिम सिसहर दिना देबळ विणि देवाह ॥

छंद

देबळ विण देव, करम विण दरसण,
बप बनित्त भरतार विना ।
पामण विण वेद, विद्या विण वीरग,
गौज धनह विण जिसी मना ॥
रावत विण खड्ग, अबड विण राजा,
करसण विण बखिवाह किसौ ।
सुरताण कहै कलियाण-समोत्रम,
त्याग परै कुळ जलम तिसौ ॥ १ ॥

पाणिज विण साह, सहर हाटां विण,
जळ विण गांव बसै जेहडौ ।
विण गाथा निष्ठम, समा पवित विण,
विण महमा तीरथ तेहडौ ॥
मंजी विण राज, रतन विण पारिख,
विण रित करि भावस वरसौ ।
सुरताण कहै कलियाण-समोत्रम,
त्याग परै कुळ जलम तिसौ ॥ २ ॥

ससहर विण रैण, नीर विण सरहर,
 पमंग जिसौ असवार पखौ ।
 आदर विण भगति, देव विण आसति,
 विण भायां ससार विखौ ॥
 रंग विण व्याह, बेस विण रामति,
 सुंदरि विण ग्रिह-वास जिसौ ।
 मुरताण कहै कलियाण-समोभ्रम,
 त्याग पखै कुळ जलम तिसौ ॥ १ ॥

नायक विण सेन, निमौ नेहम विण,
 गम विण ठाकुर जिसौ निशा ।
 दीपग विण मंदिर, जोन विण घरसण,
 वास सुखह विण जिसौ वण ।
 साहस विण पुरख, वेज विण साकुर,
 जग जीवण विण मोत्र जिसौ ।
 मुरताण कहै कलियाण-समोभ्रम,
 त्याग पखै कुळ जलम तिसौ ॥ ४ ॥

गुण विण गरब, बँठ विण गायन,
 वास अरथ विण जिसौ वण ।
 नाकह विण रूप, नयण विण निरखण,
 मुरत सवण विण जिसौ मुण ।
 वाचह विण साच, वाणि जीहा विण,
 हरि कोइ विण चूक हसौ ।
 मुरताण कहै कलियाण-समोभ्रम,
 त्याग पखै कुळ जलम तिसौ ॥ ६ ॥

[२]

गीत ६

बादल साया फूलाणी रौ

१

झल समये जु तैं मांडिया, साखा,
घाट सुकवि सबवाट घड़े ।
प्रसिध तया प्रसाद न पड़ही,
पाखाशिया प्रसाद पड़े ॥

२

जातै जुगै न जाये, जादम,
धोखे अंतरि सूष धरे ।
सुसयद मंडप किया तैं साचा,
काचा जाइ काकरै करै ॥

३

कवि कदिया रोये काळा धिरि,
रिध मांडे ताइ सथिर रहै ।
ढढ़े नहीं जस तया धवलहर,
घर मंडप साणवर ढढ़े ॥

गीत ६

राठौक पायू थांघलौत री

आसियौ वांझिदास कहै

१

प्रथम नेह भीनौ, महामोघ भीनौ पछै,
छाम चमरी, समर भोक छानै ।
रायकंवरी धरी जेण धागै रसिक,
धरी चढ़ कंवारी तेण धागै ॥

२

हुवे मंगल धमल दमंगल धीर हक,
रंग तुठौ कमध जंग रुठौ ।
सघण बूठौ कुसुम घोड़ जिण मौड़ सिर,
बिखम उण मौड़ सिर खोड़ बूठौ ॥

३

करण अखियान चढियौ भसां कालमी
निवाहण धेण भुज थांधियां नेत ।
पंवारि सदन घर-माल सं पूजियौ,
खरिं किरमाल सं पूजियो खेत ॥

४

सुर बाहर चढे चग्यां सुगह री,
इतै जस जितै गिरनार आवू ।
विहंड खल खीचियां तण दल विमाड़े
पौढियौ सेज रण भोम पायू ॥

गीत ७

राठौड़ पावू घांघळौत रै

गिरवरदान कहै

१

तणी घघावण नेत घंघ घरण सोढां तणी,
तरण चंद यदगा कज वरण सावू ।
अमर कप करण प्रथमाद सिर उमदा,
परणवा पधारे राव पावू ॥

२

भीण गंडजोड़ पद बांध कर भालियौ,
जठे वर बीदगा हेत जोड़ी ।
चारणां तणी चित घाड़ नै चालियौ,
घालियौ अगन में विषन घोड़ी ॥

३

नेह निज रीक री घात चित ना धरी, -
प्रेम गवरी तणौ नाहिं पायौ ।
राज-कंसरी जिफा खड़ी चंवरी रही,
आप भंवरी तणी पीठ आयौ ॥

४

द्रीवछड़ द्रीवछड़ अक पग धरंती,
- कुल्लट नट-चटा ज्यूं मक करती ।
काळका-चक ज्यूं नावदो केवियां,
मदां सिर काळमी दक भरती ॥

५

ज्याग रा गीत सुण प्रीत न करी जिके,
प्रीत हृद चारणां हूत पाळी ।
धीत रै धादरु दुषी जिण धार में,
धीत रज रीत घट तणी चाजी ॥

६

आवृतां देखि हम कियौ रंग धाड़वी,
धाजता नगरां नावृद्वयो वीद ।
जावृतां अम्भ री अवे नह जाण वरूं,
जठे पग थांसिया संभरी जीव ॥

७

हाक सुण खीचियां नाथ नह हालियां,
मूँछ कर धालियां बांध भाबी ।
अठी कुल उजालण पाळ अधियावणौ
भुजाले भाखियां हाथ भाबी ॥

८

विकट अग अटक विहुँचै फटक विचाले,
विबभ सर छटि घट छिटकि रहिया ।
लोथ हूँतां पट्टे-माथा अटक अटक,
स्टकि वजि दुहं दल अटक रहिया ॥

९

फेरि भुज सेल खल बांधि जिम फांधळा,
घेरि घण थटां जिखां तोड़यण घात ।
खल खलां पत्र मरि जोगणी घपाई,
खल घर धिनो जी बांधलां छात ॥

१०

चंद शंभै जिसा परत मन घर चंगा,
सांपरत करी तन कांच सीसी ।
घांड़ला भूल राखत पड़े आगिदा,
बिढा संग सांड़ला सात-थीसी ॥

११

तेण दिन गाळियौ खगां दळ तोलियो,
घोबियौ घचन निरमाहियौ योख ।
पाळघा साब भरि अमर रहियो प्रिथी,
काळमी सटै वित पाळघा कोख ॥

१२

सकत रा हुकमी चिनो धांधळ-सुतन,
जगत धिन जिका पित मात जणियौ ।
कहै कवि गिरधरौ उक्त परधाण कय,
समदरां अलग धाखाण सुणियौ ॥



५३

कवियौ रामनाथ कहै

साढया हंसौ साथ अरज करे छै आप नै ।
हथलेवा री हाथ जघियौ पण रचियौ नहीं ॥ १ ॥

पड़वै नह पोढी सर सोढा बिलखै अखा ।
चंवर धीच छोडी किम कर सोढी यामणी ॥ २ ॥

बरजे बाली बाम कर जोड़या छनी कनै ।
शेक घबो आराम कर पाछै चढजाँ, कमध ॥ ३ ॥

धूं फिर-फिर आसी कमधज नै लाही कहै ।
छनी, किम छाडी आधा केरा छठिया ॥ ४ ॥

हथलेवौ नर-लोक पइसारी परलोक में ।
मुख बिलसण सत-लोक जान सहीता आवस्या ॥ ५ ॥

गीत =

राठौर भरड़ा बूढावत रै

१

कर जेक करै, कर बियौ कटारी,
सुचवै भरड़ौ जीद सना ।
घायौ हि मांगूं घाहि बिन्हे कर,
काकौ हि मांगूं तूफ कन्दा ॥

२

घामौ पाणि कणाउळि घाले,
पाणि बियौ जमदद परठेय ।
भरड़ौ कहै, मांटी होइ, जिदरा,
बूढौ पाबू मांगूं येय ॥

३

घड़ दिव धारालो राख घांधळ,
गाली सत्र सांकड़ौ ग्रहे ।
घले कहीं रा पिता वीसरै,
काका ही वीसरै कहे ॥

४

केवी भरड़ै घाहि कटारी,
केवी दिस ऊठियो कहे ।
घले कियौ रा पिता घहे तूं,
घले कियौ रा चचा घहे ॥

गीत ६

महाराणा हमीर अबसियौत री

सौदा बारु री क्यौ

१

ईला धीतौड़ सह घर आसी,
हं था रा दोखिया हरुं ।
अणणी इसी कह नह जायौ,
कैवै देवी, धीज करुं ॥

२

रावल बापा जिसौ राइ गुर,
रीक खीक सुरपति री कंस ।
बस-सहसा जेहौ नह दूजौ,
सगती करै गळा रा सुस ॥

३

मन साचै भायै महमाया
रसणा सेती घात रसाळ ।
सिरज्यौ गंठे अड़सी-सुन सरिखौ
पकड़े खाऊं नाग पयाळ ॥

४

आखम कखम नवै खंड ईला
कैलपुरा री मीढ किसी ।
देवी कहै, सुण्यौ नह दूजौ
अवर ठिकाण भूप इसी ॥

गीत १०

राठीव राव ससस्ता सीढावन री

१

अदि-नार कहै भरतारां आगै,
तिणु निस-दीह रहै मन तास ।
वेरी सज्जन बहै जां यांसे,
प्रेहया तन री केही आस ॥

२

सामापणौ सिधहर सामी
तै न न केही रूप चियांह ।
सतहर धूठ जांह नवसहस्रौ,
जम हिय पणौ न जोये आंह ॥

३

जगै सुर सुर आयमतै
तीडावत दूकड़ी तिणु ।
जाम घड़ी तिख दीख न जाणिस,
गिणिया सांस सोदाग गिणु ॥

गीत ११

राठौस राव मल्लीनाथ सलखावत रौ

१

घाहाइनगर घाराह विधूसे,
 पूकारे नित पंडरवेस ।
 सुनर माल चर सलखावत
 डाढां माहि किया दस देस ॥

२

मुणियड़ बाहइमेर मंडौवर
 घू पनमाल चढावे धौड़ ।
 घूहड़ियौ बीजा ही धाखे
 रस खेघे हूगौ राठौड़ ॥

३

भांजे मोमि गुढी भिलवाही
 घाकिम माल चरे घेड़ाय ।
 पगां हेठ पोहकरण पुगळ
 खात्रादे खाडा बळ राय ॥

४

गिड़ आंगवण न घाव गरवौ,
 सात्रन मारे माहि संग्राम ।
 मोयू माल चर नर मोग,
 गढा समेत गिलै नित गाम ॥

गीत १२

राठौं जैतमाल सलखावत रौ

१

पण ग्रहिया जैत मिलण कज पातां,
जै अखियातां जगत अछै ।
अटसट तीरथ पहल उघाये,
पीठयौ न्यौ समियाण पछै ॥

२

इधकौ रघर वहु पग आचा,
काचा बेलै हियौ कंपै ।
सलख-समोभ्रम घणै हेत सुं
जैत, मिलण कज आव, जेपे ॥

३

देखि फवी पहियो यड दावौ,
अम्हां कमल नर भाग इसौ ।
सारे रसी वहु तन सड़ियो,
फहौ, मिलण चौ बैत फिसौ ॥

४

फहतां हंसे मरहपियो कमधज,
जग इचरिजियो देखि जुवौ ।
याहां ग्रह मिलतां सुर धूमे
हेम सरीख सरीर हुवौ ॥

५

धन-धन कहे प्रथी मन धारण,
कळरु काट निकळंक कियो ।
दसमा साजग राम सदेवत
दिन तिण पीठवं विरद दियो ॥

गीत ११

राठौड़ राव बुंदा वीरमदेवोत

बारहट दूखी कहै

१

असुरां खुं किया कमंध असंकित

प्रघट प्रवाड़ा बिहूं परि ।

गढ गढपत चरंहे रायां गुर

मारे लिया स दीध मरि ॥

२

घारां दुहां अभिनमै गीरम

कापर नह जिम कीध कितां ।

यहि दुरवेस दुरग कीयां वसि,

दीन्हौ बहियै दुरवेसां ॥

३

बारहटां बुंढराव चवीजै,

दीन्हौ हम बीयां हम देस ।

पंढरवेस पाड़ि गढ पैठौ,

पड़ियै पैठा पंढरवेस ॥

गीत १४

राठौह राव रिद्धमल चुंदावत रौ

हरीसू छै

१

सिर संपति संग्रहे निहसे नित प्रति
 करि मर निय साहियै करि ।
 रेवंत पूढ वसै जइ रिया मख
 घास म गणि तइ वैर हरि ॥

२

कीजै रयण तणै छै कुल कित
 वैरायां सुं वत अवत ।
 जई अहां निस दोहिला जंगम,
 सोहिला तइयां म गिया सत ॥

३

सुजडाइथ खुंदराउ-समोअम
 मै वीरातन वैर विधि ।
 रोपै जई पमंग आसण रिधि
 रिम की भांजै राज रिधि ॥

४

राव रिद्धमल रीति रायां की
 सेनाउळि मेळे सघर ।
 पायै तई उपाडै अरि-घट्ट
 घोडै जइयां करै घर ॥

गीत १५

राठीर राव रिङ्गमल चूडावत री

परमो कदै

१

अपूरव घात सांभळी अेही,
रिम चूके म्रित दिन, रयण ।
सूतै तहिज काढी सुजड़ी,
जागत कढै घणा अण ॥

२

चूक हुचे वेइरु चीतारै,
वाटै केइ चहंतै याढि ।
पौढिया रयण जेम प्रतमात्री
कद ही कोइ न सकियो काढि ॥

३

संत परजाई चूक अहाड़ा
अमदळि हुंघ हुंघी ऊखेळ ।
रिणमल जेय कियो रायागुर
मेळ जूज अल जमदढ मेळ ॥

४

येअपियात, सलखदर-ओपम,
अगै न सुभी सुर असुर ।
कर सूतै मेनिया कटारी
अणी सु काढी मिसप-अर ॥

छोसीदिया चूड़ा साछतत ती

१

चाबंतो कोट पयंपे चूंड़ी
 जे पुरसानन तणा अखर ।
 रण मुड़िये नांही जो आपण,
 आगे पारि मुड़े अर ॥

२

तो ने रंग असो, चीन्नीडा,
 बांच वेद तणो वयण ।
 रहनै आप जूक पग रोये,
 पड़े क पग छाडे प्रसण ॥

३

तोह पगार, फहै लाखावत,
 गैमर हिमर जेय गुड़े ।
 मुंह रावत जो आप न मुड़िय,
 भरि आवे के प्रसण मुड़े ॥

महाराणा कूंसा मोकलैत रौ

१

कलहेवा चूक कूंमकन राणा
जगत तणा गुर दुरंग जळ ।
काळ्यां अचरज किसौ फटारी,
काढ्या जिण पेंतीस कुळ ॥

२

समिये रिसम लगै सुरताणा
राच मेवाडौ चढै रिण ।
बांक पंड किम तिण वाढाळी
जग छय पावोरिया जिण ॥

३

सुजडी मोकलसीह-ममोन्नम
मदे दुरंग गिर चडा मद्द ।
जिण चीनडिया किम चीसादे
प्रियमी नर खड तणा पद्द ॥

४

करन नहीं, राणा कूंमकन,
जो तूं बळगत बाध जम ।
मानय देव दर्शत न मानत
कळह कटारी तणी क्रम ॥

५

आणी असह जडाळी आहव
फुटनी धोह में फर ।
हय तौ कळह कूंमकन होये,
न तौ असुर सुर नर अवर ॥

गीत १८

महापद्म कुंभा भोक्कौत तै

१

केकाणा अरथ ऊतम कुंभकन,
 वसुधा लै, अंता घह न ।
 कलह म मांग, पयंपै केवी,
 मांग अघर वित जिफा मन ॥

२

अथ लै, राणा, अभाळै अधकी
 भोग वियाप तणा मन भाव ।
 भूपत अेता भलपण भणन
 भारत हुंकारा न मराव ॥

३

संपत लै भोक्कली संभ्रम,
 धर संग्रह कर, रीस धरौ ।
 विण हंकणै संग्राम वैरहर
 कहै जिफा बीजा स करौ ॥

४

सादण समद सेन, सीसौदा,
 राणा तो सूं राय रिम ।
 अरथ घरीस करै सिर ऊपर,
 कलह घरीस न करै किम ॥

गीत १६

राव जोषा रिदमलौत रो

हरिसुर कहै

१

बहु राधां राणां याद विवरजित
जोध कलह-व्रिस जिफा लुई ।
चैराइयां तुहाळां भंगवट
हव जाये कुल-वाट हुई ॥

२

भारग धीरमहर कुलमंडया
मिलियो ज्यां तुं प्रिमै-मया ।
मुड़ियां तणौ हुवौ ग्या मांहे
परियां गत जाये प्रिसया ॥

३

प्रवि प्रवि जोध पमंगि पडियाळगि
तो निहसता निवहि निशद ।
कहै ति किरि यापीकी बाधी
भुईं भाजता प्रिसण भइ ॥

४

जाणियो आज तूमप्रति, जोधा
धीर कलह-गुर खडग-धर ।
नहीं तिकी सत्रहर अणनमियो
नमिया चहरै जिको नर ॥

गीत १०

राठौर कांघळ रिक्मलौत री

१

खानाखो खंडे खड्ग बल खाधौ,
 खाधौ भे प्रब आज सु खाह ।
 कांघळ कहं, कंधियै केहर,
 साथ किसी ताह किसी सनाह ॥

२

रिक्मलौत कहै रिक्म कथा
 अचड तियागी बोल इसौ ।
 जूह-विहार किसी जीव-रखी,
 केहर कथां साथ किसी ॥

३

जरद जदै नह साथी जोवै,
 पर-दल दीठा पंचमुख ।
 बाध बलै न दीख बोलावे,
 रावत बलियौ तेण कब ॥

४

सहर भइंग सराहि हौद सिर
 सारंगकां माथै सुजइ ।
 पंचमुख साथ यणौ पाघरियौ,
 पांच खान पादे अपद ॥

गीत २१

सरयहिया जैसा कशादैत री

१

मौढ़े घड़ सोरठ मेछ मणारंभ
बांह बिलागा घर श्री धेय ।
महमंद साह करै माणेवा,
जायवा दियै न जैसंघदेय ॥

२

महमंद साह जेम घर मोटी,
सरयहियाँ सेंधणी समाथ ।
हेवे राइ जोड़े हथलेवौ,
हिंदवां राव बिछोड़े हाथ ॥

३

पाट अेक बैसे परणेवा,
पाट उधोर उथापै पाट
करग ग्रहे महमंद साह कन्या,
करग बिछोड़े सुतन कवाट ।

४

पाण चढे जादव राइ परणी
पंदरघेस कन्हां लै पाण
जैसंघदे ऊमै किम जायै
सोरठ घैरड़ी घरि सुरिताण ॥

गीत २२

राठौह रान बीका जोधावत री

१

वमीखण जोय कणैगढ पेठौ,
मारु, सु प्रसन धियै मुरार ।
घडां सेव फीधां, राव बीका,
सेवग घडा हुवै संसार ॥

२

ईख वमीखण, बीक अलम घण
नयसहसां भाभरण नरीद ।
जावै जिके सुपह, जोधावत,
अणजाचक वै धियै अनीद ॥

३

अगुट वमीखण थापे तीकम,
भेह पदंतर प्रिथी इन ।
मोटा हुवै सेवियां मोटां,
मुरधर-पत, अवधार मन ॥

४

रावण-बंधव राम रीकिये
आपे लंका करि अचल ।
बिख जाय जिसा ओलगे, बीका,
फेर मखै ताय तिसा फल ॥

गीत २३

एठौड़ राव धीका जोघाउत रौ

१

धैरायां छाह विसम छल धीकै
हेकां कहै स हेक मन ।
तूका आह सामठा देला
घारण च्यारे चरण धन ॥

२

धीकौ हेक चियारे घारण,
धोमे सकै नहीं धरि-धाट ।
सारसियालां हुवौ सामुहौ
रोही सो करतो रङ्गडाट ॥

३

धैरायां ऊघेइण धीकै
हेक रचे पह सबल हियौ ।
आत्रे सीह तणी थह ऊपरि
कुंजरे चिहुं ओडीर कियौ ॥

४

सातब देदै सिखर सारिखा
बंगाली बग्गाधवल ।
केहर धीकौ विचै कुंजरा
कठठे ऊवांसे कमल ॥

५

ओर हाथ नावै जोघाउत,
धैरी विदै न दूजी धार ।
खुंहटी गा कुंटाळे चाखे
चार कि बज हाथिया चियार ॥

गीत २४

राठौड़ बीदा जोयावत रौ

हरिसूर कई

१

सरवर नदि सघण फोडि बहु करिसण,
मांडे भाप अधिक मंडल ।
धीर किसुं जोवै सठे वसुधा,
जलिहर लेखी तयो जल ॥

२

पालर अण्णत्रीठिया मिथी पुढ़ि,
मिथमी अण्णत्रीठिया पुण ।
दीजे धीरम जगिदातारं
घण दानेसर चिरिद घण ॥

३

मुदत कल्याण भाप बहु मंडे,
इम अवधारि कमध अण्णनीद ।
जल आपिया तयो फोड़ जलिहर
निमिख न जाणै धीर तरिदि ॥

४

घडदातार धरिसतै बीडा,
मांडे अधिकौ भाप मन ।
घरा सरिस नित नित धाराहर
घोठ न दासे जोघ वन ॥

गीत २५

राठीइ दूदा जोधावत मेरविया री

१

मोल न घाएया कोह घोंक न मेरघा,
'कल दुहु चंग म कीया ।
मास्तादीन तख्त मदि मस्त,
लीजे (जिम) दूदै लीया ॥

२

तसकर दुई न दूकौ तांडे,
जूषा पाण न जीता ।
जूह विहार लिया जोधावत
सिरिया खान सदीता ॥

३

जांडां जोपर घट घाह घड़िया,
सुडी सु पद समाणा ।
दूदै हायी इणि परि लीया
सबखहरे सुरताणा ॥

४

साह अढोळी कुरळै बीवी,
घर सह दूदै चहिया ।
फूंक फाजल गमलै गळिया,
रोवतरी सुर रहिया ॥

गीत २६

महाराणा रायमल कुंभकरणीत पै

१

चढे पूर पावस घहै रायमल रण चढे,
 नघौ भाराथ मे दीठ नयणा ।
 घहै घानास, तू काय राते वरण
 जळ अघक, पूछियो गंग-जमणा ॥

२

फोड़ भड़ फचरिया रायमल कोपिये,
 जुड़ण मोटा करे कुंभ-जायौ ।
 रळतळै रुवर, रण-भोम रहियो नहीं,
 ऊपटे नदी-जळ मांदि आयौ ॥

३

अजड़ मेवाड़ राय जीप माळघ तणा
 तुरक दळ रहचिया रायमल सीर ।
 अलर-घड़ तोड़ि ओहाळ मुंह ऊतरे,
 नदी नदियां मिले रातदौ नीर ॥

४

हुवे हींदू घड़ा सेन देवै हुवे
 मूक उपकंठ संगराम मातौ ।
 घणौ सीसोदियै वहे छाई घड़ा,
 रुधर घण मिले, तिण नीर रातौ ॥

गीत १७

राठीक महाराज अखेरजौद री

रतनू भरमौ रहे

१

माटीतण तणौ अरी घाह मिळतां
हुविअै समहरि अंतर हुचौ ।
अरिजण गोपि-ग्रहणि औहयिचौ,
महिरावणि गो-ग्रहणि मुचौ ॥

२

धांगै अनै अनै धाङ्गीतै
लये लूटि अंज पसरि खयी ।
ऊमै गयी ज गोपी अरिजण,
गायां पड़ियै सिहर गयी ॥

३

सुत अखैराज मुचौ चढि सरे,
गहणि गोपि अनै गऊ ग्रहणि ।
रणि संतनहरौ न चढियौ रुके,
रयण कळोघर चढे रणि ॥

४

पांडव मरे न सकियौ मिडि भुइं,
रुके चढे मुचौ राठौइ ।
किसन तणी अतेवरि कारणि,
महिर घेन कारणि कुळ मौइ ॥

गीत २८

महाराणा छांगा रायमलौठ रौ

१

पड़े धुंय ढीली सदर, सौर मांडय पड़े,
 सुपह शज्जेण लग थाह सजै ।
 धार पतसाह चै हाथिया बांधिया,
 धार पतसाह तुं न साम याजै ॥

२

कटक धंध सके चीतौड-पह कलहूतै,
 बडा राणा तणा विरद बहिया ।
 गैमरां तके सुरताणा रा ग्राहजै,
 गैमरां धणी संग्राम गहिया ॥

३

सार अंकुस सहे धालवत समर भर,
 मळे चांपानयर ढीबड़ी भाण ।
 जदग बळ खांभिया किता खेतादरै
 सौंधुरां जसकरां सहित छुरिताण ॥

गीत २६

महाराणा सांगा रायमलौठ रौ

१

जंढां लख गेर पवै खूमाणो,
रोसाखण रीसाणो राण ।
सांगी बंध त्रिय्या नह साहै,
सांगी बंध साहै सुरताख ॥

२

रोहणियाळ सक्के रायां गुर,
घाये असुर उतारे घाण ।
भयळा - घाल न धारै आडी,
खूदाळम घातै खूमाण ॥

३

सामे मेळ सुजइ जस धरिये,
कळकळ कोप किये कमळ ।
गाळा - बंध महल नह घातै,
गुण घातै पनसाह - गळ ॥

४

असगर गहे कलम किय आचट
विढतै घड़ा कंवारी व्यंद ।
मेछां तणौ प्रवाड़ी मोटी
नव पंद हुषी राण नरियंद ॥

गीत ३०

महाराणा सागा रायमलौत रौ

१

इयराहिम पूरव दिसा न उलटै,
 पछम मुदाकर न वै पयाया ।
 बखणी महमंदसाह न दाँदै,
 सांगी वामण त्रिहुं सुरताण ॥

२

साह हेक दस हेक न सामै,
 विदस न सामै हेक वण ।
 सुजसै राण रायमल-संग्रम
 जेखलिया पतसाह जण ॥

३

साई सुती गमय न सामै,
 लीह नका^० लोपवै लग ।
 थापाहरै बलाक्रम बांधा
 पतसाहां त्रिहुं तथा पग ॥

गीत ११

महाराणा सांगा रायमलौत रौ

सौदौ बारहट कमणौ पालमौत कहै

१

सत धारजरासंध आगळ कीरंग
विमुद्धा टीकम दीध घग ।
मेलि घात मारे मधुसदन,
असुर घात नाखे अलग ॥

२

पारथ हेकरसां हथगणापुर
हठियौ त्रिया पड़तां हाथ ।
देख, जका दुरजोधन कीधी,
पछुं तका कीधी कांइ पाथ ॥

३

इकरां राम तणी तिय रामण
मंद हरे गौ बह-कमळ ।
टीकम सोहि ज पथर तारिया
जगनायक ऊपरां अळ ॥

४

घेक राढ़ भव मांदि ओढ़यी
औरस आणौ केम उर ।
माल तणा, केवा कज मांगा,
सांगा, दू साल असुर ॥

गीत १२

महात्मा सांगा राखमलौत रौ

१

अगां विण सूर जेहवौ अंवर,
दीपक पाखै जिसौ बुवार ।
पावस बिना जेहवी प्रथमी,
सांगा विण जेहौ संसार ॥

२

विण रिय धोम, फसण जौसी विण,
धाराहर विण जसी घर ।
जैसीहरा, जिसी जाखेवी
तो विण प्रथमी, कळप-तर ॥

३

जळहर गयो दुनी-जीवाइया,
फवै नहीं दीपक फरक ।
साहां ग्रहण मोखणौ सांगौ
आथमियौ मोरौ अरक ॥

गीत ३३

भावा अजा राजधरौत गी

१

पड़ियौ नैजाल छिडे पादरियै,
भंगघट घाट न कम भरिया ।
अजमल सगौ खड़ग रै ओलै
अधिपति मोटा ऊबरिया ॥

२

सेवां मुंहे राजधर-संभ्रम
ढाहे सगळ मूगलां ढाल ।
रावळ राव उबरिया राणा
ओलै तूम तणै, अजमाल ॥

३

मालै भार साथ सू माले
सिंघ सार जिहीं सहा ।
राणा घड़ उबरिया राणा,
रवि ऊमै त्यां बोल रहा ॥

गीत ३४

पादव गहज हमीरीत रौ

बारहट घाघौ कहे

१

काछि काछि घन कीची काया ।
 ऊलसिं अंब उग्रह घर माया ॥
 रित तिण साहय पावस राया ।
 सुकवि चलावि, मबार सुदाया ।

२

चढती कंठलि बीज चमफकै ।
 भड़ माचंतै सुकवि भणफकै ॥
 ऊनइहरा, इंद्र ऊवफकै ।
 गुणियण मोकळ, सिंहद गहफकै ॥

३

आणंद मोर सुसरि आवाजै ।
 वीणा घंस मधुर सुर धाजै ॥
 भुरजे भुरज मिहंता भाजै ।
 गहड़, सीप दै धंवर गाजै ॥

४

भाप फरे सर सुमर भरिया ।
 धरती रूप अनेरा धरिया ॥
 हमीरीत, हूवा गिर हरिया ।
 सीस समापौ, घर सांभरिया ॥

गीत ३५

राठीक सेखा सूजावत नै गांगा बापावत ऐ

१

बापीकी भोमि बरायरि यौले,
घड़ त्रि सरूप रचे घण घाह
सुरा घट उजवाळी सेनै,
राधा घट उजवाळी राह ॥

२

लोहि सरगपुर सेनै लीयौ,
लोहि प्रवाही राह लियौ ।
धरती कजि घड़ घड़ा धरपती
करता आया तिसौ कियो ॥

३

इल छलि थाट घड़ा आफाले,
धानिक मोटै घात थयी ।
जिम दीजै तिम सेखै दीधी,
लीजै जिम तिम राह लयी ॥

४

तुडि हेन गयो मरण दिस ताणे,
पुश्चि लयी हेक तुगपणे ।
सकजा विहू नहीं कोइ सासौ
सिखर गग धरि सुर तये ॥

गीत ३१

राठौड़ राव जैतसी लूणकरायौत री

१

बरे खेत खुरसाख रा पिसण हुय पाहुणा,
 धींग राठौड़ वी धरा धाया ।
 सरां सारां मुहे सेन सूरताख रा
 पिड़ चढे जैतसी राव पाया ॥

२

नामियौ अनमंघौ तीठ कीधी नहीं,
 समर भर पियौ पतिसाह साथै ।
 सार भैराक वीकाहरै साहिया,
 मांड हूँकार तां दीध माथै ॥

३

खोड़तां घूमतां असुर खोटा खिया,
 मिड़ण भाठी त तौपियौ भमरै ।
 हुलां प्यालां मुहे ठेलियौ हींदवै,
 करण रै नामियौ, पियौ कमरै ॥

४

ऊकरड़ अक अकां पढ़ै ऊपरै,
 नारि संभार सै कंत नाया ।
 मरण मद मलौ दीधौ खळां मारवै
 पंदरावैस पीठाण पाया ॥

गीत १७

रूपावत एठोइ भोजराज सादावत ते

१

प्रगटां पंडनेस सुपह सांचरिया,
बाजी हाफ, न कोइ घळै ।
बाबा चंद ऊठ अतुलीकळ,
भोजराज, गढ तूम्ह मिलै ॥

२

बायो जिकै मरणा-भय जाय,
रहतां मयाँ ज साथ रहै ।
सिर साटै देसै सादावत,
कोट, म वीहै, भोज कहै ॥

३

योकानयर भोज घाढालै
सत अणिमे घादियो सरीर ।
रूपाहरै शपियो रुझी
नहचै ऊतरतौ नीर ॥

गीत १८

सांघला महेस फल्याणमलौठ रौ

१

इम कहै महेस बडै प्रब आयै
गहि असिमेर दासिये गहि ।
महि मो सुंपी राह मारवै,
माथै साटे देइस महि ॥

२

खग ऊड़जिये अभंग सांघलौ
घदै कलावत धीर घर ।
धर मो सुंपी जका मो धणी,
धू पाळटि पाळटिसी घर ॥

३

पीयलहरौ अभंग मोटै पद,
छल पद परियां तणै छलि ।
पग देसी, मधकरौ पर्यपे,
कमलां पाळटियै कमलि ॥

४

चंद सुर लग नाम चढावे,
करि जस समंदां तणै कहै ।
सुरां मरण सामि-घम साटी,
घसुघा दीन्ही त्रिगुट घदै ॥

गीत ३६

सांखला महेस कल्याणमलौत रो

१

मिटिये निज दलै मिटत जौ मघकर,
सुर खत्री भंगवाट सहि ।
मेर डिगत, सायर क्रम खोपत,
अरक मिटत, इल तजत अहि ॥

२

कलियाणौत भाजतै फटकै
अरि अंत देखि बचत जौ भंग ।
मेरु खलत, सजा दधि मूकत,
पलटत तराण, पंकत धर पंग ।

३

पूनाहरौ मुघौ दलि पलटै
दीपात्रे जांगळवी द्वेस ।
सुर-गिर सथिर, कार बध सायर,
सूरिज सतप, भार भस सेस ॥

गीत ४०

सांखला महेस करयाणमलौत रौ

१

रिहू गा रखपाल हुना जे राउत,
घणू आवियो घाट घणौ ।
गढ नागौर समरियो गाढौ
तिगा घेळा कलियाण सणौ ॥

२

मांकी जिके हुता गढ मांहे
खिसि गा आयै भरया खरै ।
इम जीजती नगीनी आखै,
मथकर हुयै त तूटि भरै ॥

३

असतां भई तखत इम आखै,
कलि जुगि अमर न हूवौ कोइ ।
अत्र दिन वीकानेर महेसै
जुद्धि ऊजळौ कियो तिम जोइ ॥

४

सबळ अचढ़ नाकोट सराहे,
साराहै अखियात सुर ।
प्रियम-कळोधर पड़िया पाछै
प्रियणे. लीधौ वीकपुर ॥

गीत ४१,

घाटेस सिवा रौ ।

अककुर न जुजठळ, भीष न अरिजण,
पळ-दळ लाग, खोद खिंधी ।
पडतै भार प्रजा पीडुंती,
झीरंग कहियो- सियो सिधो ॥

२

भरघ न सत्रघण पळमद्र भीरी,
बंधव लखण न पुगौ बेल ।
ओळामंडळ विटयो असुरां,
वीठळ सादयियो घाटेस ॥

३

अेकी हि जादम भीड न आवै,
रीद पेस उग्रमेण रहै ।
आवै हण न, गुरड नउ आवै,
कमघ आव, रिणळोड फदै ॥

४

अेकी साद करंता आवी,
अाप मुची, मारिया अरि ।
पीजर सिचा नरै पग उरठे
हाथ लगाये पछे हरि ॥

गीत ४९

सरबहिया बीजा दूदावत रौ

बारहट ईसरदास कटै

१

रंग रातौ चीन फचट-हर राजा,
छायरां हूंतौ ऊतरियौ ।
सौ मुख दीठै लाय सियागी
बिजा, जगत सहु बीसरियौ ॥

२

बिजमल, तुम दीठै बीसरिया
सयल तणा भूपति सिगळेय ।
दूजा तीह भत्रै किम झंगर,
निरख्यौ ज्यां सुरगिरि नयखेय ॥

३

अनि जल तीह थियै किम धारति,
जमण-गग-सद घसिया जाइ ।
दीठै तूम पछे, दूदावत,
दूजा सुपह न आवै दांइ ॥

गीत ५३

सरवहिया बीजा दूदावत री

बाहट इसरदास कहै

१

मै जाणै विजौ, विढण विधि जाणै,
जाणै नाद, वेद गुण जाण ।
जिहूँ हँक भगवाट न जाणै,
हँकै नाकारै अणजाण ॥

२

दियण-विढण भमियाळ दूदउत,
साव सीळ भमियाळ सही ।
भाजेया भमियाळ न भारथि,
साकारै भमियाळ नही ॥

३

पिगळ भरद पुराण परामन,
विध विध जाणण सयळ निमेष ।
जैसाहरी न भंगउट जाण,
ऊतर करै न जाणै भेक ॥

४

आण प्रवीण विजौ अस प्राहग,
करणीगर सह विधी कियो ।
मम कायरा खग्या मपगुं रा,
सु तो न जाणै सरवहिया ॥

गीत ४४

सरवहिया करण नीमावत रौ

बाहट ईसरदास कहै

१

धानंतर मयंक हण सुक धायौ,

* नर पालग 'कद्र' रिख निवड़ ।

छेक धारड़ी करण उठाड़ी,

अन सट तणौ प्रियाग बड़ ॥

२

जो नू करण नहीं जीवादै

सरवहिया दीनां ची साम ।

तूक तणौ ओखध, चानंतर,

केहै पछे आविस्ये काम ॥

३

करण जीविस्यै मानिस्यै गुण कवि,

कितै जगत चा सरिस्यै काज ।

अमी सु केहै काम आविस्यै,

आपै नहीं ज, ससिहर, आज ॥

४

ऊमौ करौ ओखदी आणे,
धीर सांच मन जेम धरै ।
हणयत, प्रसिध लघण श्री हवड़ां
कवण मानिना लोक करै ॥

५

सबदी घहिस्पां तूक तणौ, सुक,
नीपण जंपां जु आंक निखाड़ि ।
अप कजि असुर घणा ऊठाड़े,
अम्ह कजि करण छेक ऊठाड़ि ॥

६

समंद-सुगन, सुत-पवण, मिरग-सुत,
ओखिद त्रित आपौ ऊदार ।
ऊमौ करौ चियारे छाये,
सुत विप्रमख बट यरन सधार ॥

—

गीत ४६

छाग रायल लाखावत रौ

बारहट ईसरदास कहे

१

नफ तीह निवाण निरल दाय नाचै,

सदा घंस तटि जिके समंद ।

मन बीजै ठाफुरै न मानै

रायल ओल्लगियै राजिंद ॥

२

भेट्यौ जेठ धरणी भाटेसर,

अनघत अवर चढै नह चीत ।

वास बिल्लास मलैतर धाती

परिमल बीजै करै न प्रीत ॥

३

सेयग तहारा, लप्या-समोभ्रम,

अधिपति बीजां थया अकूप ।

रइ फिम करै अवर नदि, रायल,

रेवा नदी तणा गज रूप ॥

४

कवि तो राता, घमलकलोघर,

भावठि भंजण लील भुवाल ।

बहुचै सरै वसंता लाजै

माणसरोवर तणा मुणाल ॥

५

पाधू माळ पनग गज पंखी,

किहीं न बीजै सेव करंत ।

राउल समंद मलैतर रेवा

मान-सरोवर, मन मानंत ॥

गीत ४७

आम रावल लाखावत रौ

बाहट ईसादास कहै

१

लुग भल श्रीराम सुग्रायै जाये

माहरौ भेक संदेसौ, मेह ।

दुख तूं तणौ भांजिसै तिण दिन

दिन जिण राय थासै देह ॥

२

कहे संदेसौ, जलहर काला,

जाये भाग रावल आम ।

रहिस्ये नहीं अम्हीणौ रोवत,

राख थियां विण आत्म राम ॥

३

राउल रा बाला, राउल नू

सघण, कहे जाये लग लोह ।

तूक वियोग रलै ते ताणंब

कुडि होमी विण अछै न कोह ॥

४

वचन ओह प्रमणो राजा घर,

जाये जलहर ओथ जई ।

जले भसम पिड होइस्यै जइयां

तहारौ दुख भांजिस्यै तई ॥

५

सघण, ओह वायक न सुणावी

लाखाउत आगळो लहेइ ।

तू विसरिस तइयां जइयां तिण

दिग दुरसै रज तणौ धिखेइ ॥

गीत ४६

जाम रावल लाखावत है

बारहट ईसरदाघ कहै

१

कहिस्थां तौ तूफ भलौ, करणाकर,
घषि भेकणि सहु घरे पिचारि ।
रावल जाम सरीखौ राजा,
घले घड़िस जी बीजी घारि ॥

२

पूरण प्रसिध प्रघट प्रज-पालण,
दळपति दियण दोखियां दाघ ।
अधि कोइ घड़िस त भलौ भाखिस्यां
रावल जाम सरीखौ राघ ॥

३

लीख विळास जिसौ लायाउत,
जुगति किसी हथि जाणसि जोढ़ि ।
भागी भेकणि निमल भांजतै,
करतै कळप जाइसी फोढ़ि ॥

४

जे पिण घड़िसी जुगै जाइतै,
भाजण-घड़ण-समथ भगवान ।
सकिस नहीं कोइ घड़िखौ सिरजे
राजा सु घर रीति राजान ॥

गीत ४७

जाम रावल लापावत रौ

बाहट ईसरदास कहै

१

लुग भल श्रीराम सुणायै जाये

माहरौ श्रेक संदेसौ, मेह ।

हुल्ल तूं तणौ भांजिसै तिण दिन

दिन जिण राज थासै देह ॥

२

कहे संदेसौ, जलहर काला,

जाये घाग रावल जाम ।

रहिस्य नहीं अम्हीणौ रोबत,

राख धियां विण आतम राम ॥

३

राउल रा बाला, राउल नूं

सघण, कहे जाये अग लोह ।

तूक धियोग टलै ते ताणोंव

कुडि होमी विण अलै न कोह ॥

४

बचन अेह प्रभणो राजा बर,

जाये जलहर ओथ अई ।

जले भसम पिंड होइस्यै जइयां

तहारौ दुष भांजिस्ये तई ॥

५

सघण, अेह वायक न सुणावी

लाखाउत आगळो लहेह ।

तू विसरिस तइयां जइयां तिण

दिग हुइसै रज तणौ धिखेह ॥

छंद

संमिलै बारह मेव सामगि अंग धारा ऊछळै ।
 धावीढ दादुर मोर बोलै खाळ पहुं दिसि खळहळै ॥
 रुद मचे सिहरे बीज चमकै बळे अन्नळ फरहरै ।
 राजिद पावा जाम राखळ सामि तिण रति संभरै ॥ १ ॥

मादवै नीर निवाण भरियै गिर पहाड पत्ताळियै ।
 मिलि छपन कोही मेवमाळा नदी पुरि हिमाळियै ॥
 बैवुंनि लूपां सामन्नी बढ कंड्यी जळहर करै ।
 राजिद पावा जाम राखळ सामि तिण रति संभरै ॥ २ ॥

ऊनमे अति घण मास आसु नीर नदिया त्रिम्मञ्ज ।
 धन अधिक छह्यै द्रुम्मनेनी चंद बहै चतुती कटा ॥
 नीनेद करिवा पित्र निहसै निरख बेदन बीसरै ।
 राजिद पावा जाम राखळ सामि तिण रति संभरै ॥ ३ ॥

कातिगा मास अयाम त्रिम्मञ्ज मेव चाले घर सुणी ।
 सर कमळ निगसै सरद रपणी नीर छाह्य बोहणी ॥
 नळ पद्धिम र्थभै गरज ऊतर अरक इच्छिय मन धरै ।
 राजिद पावा जाम राखळ सामि तिण रति संभरै ॥ ४ ॥

मागनिर महारथि माग मूळै मेव मूळै दामिणी ।
 करि कोट बाली सीत चमकै तपे पटु घर कामिणी ॥
 बड छया नीर पयाळ घामत रजी दड दिसि उम्भरै ।
 राजिद पावा जाम राखळ सामि तिण रति संभरै ॥ ५ ॥

मिलि हेम ऊतर पीढ माये पञ्च तरार हारवै ।
 संझै परिमळ कमज बूळ भमा पंग न सारवै ॥
 भूजंत पानर गळ निरघन माग ॥ पण नीमरै ।
 राजिद पावा जाम राखळ सामि तिण रति संभरै ॥ ६ ॥

उतराथ लहरै, लंक लागै छळ घनरांड प्राञ्जळै ।
 चंबहोयपिछमी, अगनिअग्रित सीत चा दड साखळै ॥
 दीरघ रपणी, बीड दिन करि माड माग दमदुधरै ।
 राजिद पावा जाम राखळ सामि तिण रति संभरै ॥ ७ ॥

निसि घटै फागुण दीह ओसम अनिल पंच संवारियै ।
 मिलि हेम उत्तर चाल रवि-रथ दिखण पंच निवारियै ॥
 खिति लोग रामति फाय खेलै होळिअ-अव विसवरै ।
 राजिंद पातां जाम रावळ सामि तिण रत संभरै ॥ ८ ॥

मंजरै अदभुत चैत्र मासे पांगरै पन कोमल ।
 सी जाय वर तिसि, घाम प्रागटै हुवै चंदर त्रिम्मल ॥
 वणराय भार अडार फूटै दहणि माया ऊठरै ।
 राजिंद पातां जाम रावळ सामि तिण रत संभरै ॥ ९ ॥

वैसाख मीरी फळोजै पन पसंत अन्नित आणियै ।
 केतकी जायक हसै कुसुमे भमर सीला माणियै ॥
 मद बंड चंपल वेलि दुमणौ अधिक परिमळ उभरै ।
 राजिंद पातां जाम रावळ सामि तिण रत संभरै ॥ १० ॥

परतिपौ जेठ क लुयां पागै धौम तळ हाळहळ ।
 दिनघणै, घटिनिसि, तप दिवायर जमि हुवै प्रीतम जळ ॥
 पळ अंब, भारंग दख पाचै सालणी छायां भरै ।
 राजिंद पातां जाम रावळ सामि तिण रत संभरै ॥ ११ ॥

आसाठ दंबर मने ऊयां गढल निंदा अठ बयी ।
 लू जाय नीसरि, गरमिजै जळ कुवर डीली कंकयी ॥
 बीमळा चमकै बळे बादळ ऊन बाळ स उत्तरै ।
 राजिंद पातां जाम रावळ सामि तिण रत संभरै ॥ १२ ॥

अविष्ट

आसू फातिग कदा साम भादवै ज सामणि ।
 माह पोह मगसीर चैत वैसाखां फागणि ॥
 सालै जेठ असाठ दानि लख कोदि बरीस्थ ।
 कळिगुगे बळि करण रदास वरदां बगसावृष ॥
 यारहै मास चौहंस पर बढहय वेवि न बीसरुं ।
 महिपळ माल पातां मिले सहु रत रावळ संभरुं ॥

जादेचा जसा हरधमळीत रौ

भारद्व ईशरद ॥ कद्वै

१

तिब्ब-तिल तन हुवै तणो जव तूटे,
तण तलछे तरवारि तणै ।
लख दळ सरिस लखगहर दीपक
जसौ जूझियौ साठ जणै ॥

२

पंखि भलै किसूं अगनि पहासै,
छायै किसूं संकर गळि लेय ।
घप जसराज तणौ घाय विद्वतै
लोह घार रहियौ खानेय ॥

३

उमग न अमंगळ, मंगळ न आठे,
ईस न उत्तवंग उपगरियौ ।
सामा तणौ सरीर सिंगळहौ
आवघ धारा ऊतरियो ॥

४

विइंगे हुयो न चीनौ प्रिसनर,
भय ही तणै न जायौ भागि ।
घड़ धमळीत तणौ रग धारा
लिगि लिगि गयो अग्रासं खागि ॥

५

पंखि भझौ, घळे अगनि प्रगासौ,
प्रिनयण रूढ घनो फंड तार ।
फड़तळ फटक फोट फळइता
जसै तणै फर पड़िया जाइ ॥

गीत ६०

भाता रायसिष मानसिघीत रौ

घारहट ईसरदास कहै

१

तुरक मुगर ताणीजतै सह फोर समरियो,
 सुर सुपह अथर नह काज सीधा ।
 करण संभारियो त्यार करणकरण,
 कवी रामस्यंघ दिस साद कीधा ॥

२

बंदणि गज इन्द्र ग्रहि बान कीची यिहं,
 हेवे ने भुगर लै जार देला ।
 घाउ हो घाउ हो राण धरणीधरणा,
 चाघहरि सारिखी दुई बेला ॥

३

परण नै इन्द्र विजपाळ नै वीरभद्र,
 राह तन देव सहि देखि रहिया ।
 मानउति महमहणि पार मोछाविया,
 गइद कवि गोरियां ग्रहि ग्राहिया ॥

गीत ६१

चौहाण अगमाल जैसिघीत घाचौरा रौ

१

कुंवर कासीस कलि मूळ करि माभिर्या
जुइया तो चीत, जैसिघ-जाया ।
विदया करि विदुर घरजागहर घाबळा,
ऊठि, अगमाल, अरि धाट आया ॥

२

रहीयौ आप गढि अणभंग रावां तिलक,
गोरियां हींदवा सेन गोहे ।
सोम सातल हमीर जिम सामहौ
सार घाहत अगमाल सोहे ॥

३

सामळी घड़ा जिम मल्हपतौ सामहौ,
विसरि दुहुँ दळां तूर घागै ।
कहै अगमाल इम कान्ह जिम कलहतौ,
मूफ ऊभा कवण कोट मागै ॥

गीत ६२

पमार पंचादण रौ

१

माटीपण नमौ मूवहर मामी,
 भव लग पांचा यडा भइ ।
 अकसर दिसे ठेलतौ अरि-दल
 धू पड़ियां किम गयो धइ ॥

२

पायक-घट तुम नमौ, पंचादण,
 हय-दल गयंद चढावे हीक ।
 परि केही पतिसाद पहंतौ
 माया धरण गयं, मछरीक ॥

३

खखधीरउत मीकतो खख दल
 कमल पड़े अखियात करै ।
 दिया तणी चख पांचौ हाले
 खूदाळम गौ जीव खरै ।

४

उतअंग ढळियौ भिकतो असुरां,
 नीधक तन ऊडवै नमीक ।
 अकसर गयो पंचादण ओळखि
 भारि-भारि करतौ मछरीक ॥

गीत ११

राठीड़ देवीदास बैठापत रै

१

नय कोटां तिलक नमंतां नियं दळि,
नामित चाभे खेड-नरेस ।
गह दाजयत किस्सु, रणा गहिला
देदा, पछौ भंडोवर देस ॥

२

हेफां भडां तणौ संगि हाबति,
दळ-नायक भाजतै दळि ।
पुर पड़िहार सरिस पतिसाहां
धांकिम धोलत किसै यळि ॥

३

चाभीजती धरा दळ चलतै
खटि चापडै न बाहत चोट ।
किलंश राह, जैत रा केसर,
कळिया हुचत पछै नवकोट ॥

४

भागौ हुचत तुही दळ भागै,
मह राठीड़, पड़तै भार ।
नर फर बागि तणा नखतहसै
आखत गरब किसै धासार ॥

गीत १४

राठौड़ प्रियीएज जैतावत रौ

१

राणी, मम रोइ पिथौ रिण रीधल,
रिण गा छाडि तिके मइ रोइ ।
घण जु भै रिणमाल तरां घरि
हुवै मरण तिम मंगल होइ ॥

२

पीथलतणौम करि दुख पलि अछि,
दिह गा तजि करि ताह दुख ।
आदित बेह अखां धरि अग्ये,
सार मरण घण घणौ सुख ॥

३

म करि अदोह जेतउत मरतै,
आया भाजि सु रोइ अयार ।
अै कुल वाट सदा अख-राजा,
चढ़तां फुते मंगलचार ॥

गीत ५५

राठीङ्ग जैमल धीरमदेवीत री

१

ढीली-पहि भायै राख्य ढीलियै,
तेम कहै चीन्नागद तूभ ।
जैमल जोध, धार तू जेही,
मारवा राव, म ढीलिस मूभ ॥

२

अकसर भावतै उदियासिघ,
घनै ढील कीधी चीतौङ्ग ।
मोटा छात जोधहर मडण,
'रले स मो ढीले, राठौङ्ग ॥

३

खीज करे चढियौ खूदाळम
घणा कटक बघ मेलि घणा ।
गढ नायक गा मेलिह, कहै गढ,
तू मत मेल्हे, धीर तणा ॥

४

जपै भेम दुरग दिस जैमल,
ह रत्नपूत घणी रौ राण ।
सांक म फरि ज्या मो सिर साजी,
सिर पड़ियै लेसी सुरिताण ।

गीत ५६

राठौड़ जैमल वीरमदेवौत रौ

१

जवै जेम जैमल, चीतौड़, मत चळवळे,
 हेड़ हूं थरी-दळ, न हूं हाथी ।
 ताहरै कमळ पग चढै नह ताहयां,
 माहरै कमळ जां खयां माथै ॥

२

घड़क मत चीत्रगढ़, जोधहर धीरवै,
 गज सशं दळां करुं गज गाह ।
 भुजा खं मूफ जद कमळ कमळां मिलै,
 पछै तो कमळ पग देह पतिसाह ॥

३

दूद कुल-आभरणा धुदड़हर दाखवै,
 धीर मंड, डरै मत करे धोखौ ।
 प्रिथी पर माहरौं सीस पढ़ियां पछै
 जाणजै ताहरै सीस जोखौ ॥

४

साथ आगै क्रियां वीर रौ सींघलौ
 हाम चिन पूरवै काम हथयाह ।
 पुर अमर कमल जैमल पाधारियो,
 पछै पाधारियो कोट पतिसाह ॥

गीत ६७

राठौड़ जैमल वीरमदेवौत रौ

१

गज रूप चढया, भंग रहया असंभ गति,
पुहप कमळ देसौत पगि ।
जिम जगदीसर पूजतौ जैमल,
जैमल तिम पूजिजै जगि ॥

२

गज आरोहित घड घड गढपति
चीसारा धरि धंदै चढया ।
वीर तणौ भरचतौ विसंभर,
तिम भरचीजै आप तण ॥

३

मोटा पडु आराध करै मदि,
मोटै गढ छीजतै मुयी ।
जगि हरि-भगत, तुहाळौ, जैमल,
हरि सारीख प्रताप हुयी ॥

४

रधि हाथ रुक सम घर रेखगि,
मदिपति पग तिस श्रेक मण ।
प्रम कमधज जिणु बढिम पूजतौ,
आप बढिम सुजि आचरण ॥

गीत १८

छठीं च बांछ वीरमदेजौत मेइतिया री

१

चौरंग घूरिया घर सैत चांदै
मिहै नचली भांति ।
गोरड़ी काढ़ै गात गोखै,
रहै गळती राति ॥

२

भरतार चांदै मिहै भागा
धड़किया खग-धार ।
सामहै सावणां तणी सेखों,
हरम भौहै द्वार ॥

३

सामिया वीरमदेय-संभ्रम
भरूरि चढि रिण मीर ।
कर मोड़ि बीबी तोड़ि कंकणा
नयण नाखै नीर ॥

४

मारिया चांदै मीर मांभी
खड़ग चढि करि खेत ।
सारंग-नेणी, सु-सर सारंग
सु-सर संभाएत ॥

ગીત ૨૨

રાઠૌઢ ધાંદા ધીરમેવૌત મેઢતિયા રી

૧

ઢાલાં ઢોલાં ધર ઢોંચાલાં,
જુદે ન કમધજ કિરમાલાં ।
જે જુદસી કમધજ કિરમાલાં,
ઢાણ ન ઢોણ ન ઢોંચાલા ॥

૨

ગાજાં યાજાં ધર મેંદ ગદાં,
જુદે ન ધાંદો રોદ-ઘદાં ।
જે જુદસી ધાંદો રોદ ઘદાં,
ગાજ ન યાજ ન મેંદ ગદા ॥

૩

કોટાં ફૂંટા ધર કમસીસાં,
જુદે ન ધાંદો જગ્ગીસાં ।
જે જુદસી ધાંદો જગ્ગીસાં,
કોટ ન ફૂંટ ન કમસીસાં ॥

૪

રાગાં ટોપાં ધર ધગતરિયાં,
જુદે ન ધાંદો પત ગરિયાં ।
જે જુદસી ધાંદો પત ગરિયાં,
રાગ ન ટોપ ન ધગતરિયાં ॥

श्लोक ६०

शठौष महाराजा रायसिंघ कल्याणमलौत रौ

१.

पाताळ तटै बलि, रहण न पाऊं,
रिघ मांडे स्रग करण रहै ।
मो भितलोक राइसिंघ मारै,
कटै रहूँ हरि, दळिद्र कहै ॥

२

धीरोचंद-सुत अहिपुर वारै,
रवि-सुत तणी अमरपुर राज ।
निधि-दातार कलाउत नरपुर,
अमल रौर-भति केहि भाज ॥

३

रयण-दियण पाताळ न राखै,
कनक-वचण कूघी कविलास ।
महि-पुडि गज-दातार ज मारै,
विसन, किसे पुडि मांडूं चास ॥

४

नाग अमर नर भुवण निरखतां
हेफ ठौढ़ छै, कहे हरि ।
घर अरि नान्हा सिंघ यातियां,
कुरिख, ठठै जाइ पास करि ॥

गीत ६१

राठौड़ा महापद्म रायसिंघ कल्याणमलौत रौ

आढौ दुरसौ कहै

१ ।

पडौ खूर सु-दतार रायसिंघ बिसरामियो,
बिहे कुण कंवारी घड़ा घरसी ।
कुंजरां तणी मौताद करसी कवण,
कवण कोड़ां तणी मौज करसी ॥

२

कलह-गुर दान-गुर हालियो कलाउत,
खाख ऊपर कवण थाग लेसी ।
अम्हां गज मौज मौताद कुण आपसी,
दान सौ खाख कुण रीफ वेसी ॥

३

जैतहर आभरण सतर-घड़ जीपणा,
घरै कुण घड़ा दिवराय धाजा ।
दान फौज्रां तणा कवण गहणा दिये,
रतन रौ मोल कुण दिये, राजा ॥

४

हीदियां छात दोय घात लै हालियो,
घाल ग्यौ आंक जग दुष्ट पाने ।
हसत हय हीडता देखसौ राय-घर,
कोड़ियां खजाना छुपी काने ॥

गीत १२

राठौड़ हमरा कल्याणमखौत रौ

१

सहर छुटतौ सरथ, नित ऐस करतौ सरद,
 कहर नर प्रगट कीधी कमाई ।
 डज्यागर भाल खग फरगाहर आभरण,
 अमर, अकबर तणी फौज आयी ॥

२

धीकहर साहि धर मार करतौ वसु,
 अमंग अरि ब्रंद तो सीस आया ।
 आग गयगाग आग तोख भुज लंकाळा,
 जाग हो जाग, कलियाख-जाया ॥

३

गोळ भर सखल नर प्रगट अर-गाहणा,
 अरयलां भावियौ लाग असमाख ।
 निवारौ नींद कमधज आवै निडर नर,
 प्रगट हव जैतहर दाखवौ पाख ॥

४

छुड़े जम-राख घमसाख मातौ जठै,
 साज तुरकाख भड़ घीज समरी ।
 आप री जिफा थह न दी भड़ अवर नै,
 आप री जिफे थह रखौ अमरी ॥

गीत ६३

महाराणा प्रतापसिंह उदैसिंघौत रौ

१

बिजड़-ताप तो नमौ, परताप सांगण बिया,
जगत या अकथ कथ घात जाणी ।
कहर राणा तणी चार मझ भेकठा
प्रसण राखै नको हंस पाणी ॥

२

उदयवत, आज दुनियाण सह ऊपरा
सार रौ ताप लागौ सपांही ।
हंस राखै जिकां नीर अलगी हुयै,
नीर राखै जिकां हंस नांही ॥

३

करां खग भाल दुहुं राह माती कलह
दूठ लागी खळां भेष दावै ।
जीव री भास तौ प्रसण नह गहे जळ,
जळ गहे प्रसण तौ जीव जावै ॥

४

धरे ओ धरे गत कुमकन दूसरा,
चाह-गुर आप रै पंथ चालै ।
राख दइवाण परिहंस लागी रिमां,
हंस जळ जूजुवै पंथ दालै ॥

गीत ६४

महाराणा प्रतापसिंह उदैविधीत रौ

आवौ दुरसौ रुदै

१

आयाँ दल खल सामझौ आवै

रंगियै 'सज्ज खल-घाट रतौ ।

औ नरनाह नमौ नह आवै

पतसादय दरगाह पतौ ॥

२

दाटक अनद दंड नह दीघौ,

दोयण-घढ़ सिर दाब दियौ ।

मेळ न कियौ जार यिच महलां,

केळपुरै खग-मेळ कियौ ॥

३

कलमां बांग न सुणियै कानां,

सुणियै घेद-पुराण सुमै ।

अहकौ सुर मसीत न भरचै,

भरचै देवल गाय उमै ॥

४

असपति ईद्र अघनि आहड़ियां

धारा भड़ियां सहै चका ।

घण पड़ियां सांकड़ियां घड़िय

ना धीहड़ियां पढी नका ॥

५

आखी अणी रहै ऊदायत,

साखी आलम कलम, सुखौ ।

राणै अकबर चार राखियौ

पातल हिंदू धरम-पणौ ॥

गीत १२

महाराणा प्रतापसिंह उदैखिचोत रौ

१

बरियाम पिहंग न खडै वेसामी,
 जग सावज रन पैसै खाप ।
 अकबर साह न छाडै भारंभ,
 पाया न छाडै राया प्रताप ॥

२

हे मत खोकि नरींद बराबर,
 पेखे पदम हय खडै परै ।
 मेखै जोगलपुरी महादळ,
 कैलपुरी ऊखेळ करै ॥

३

प्रमथै किरण पेखि कीळापति,
 देखै मीढण तणौ दुह दाव ।
 नंद-हमाऊं रीस न नामै,
 सीस न नामे सिंध सुजाव ॥

४

सूरज-चांद ताम स मा सै,
 जरै धाव वालियो खरी ।
 हेकां सिर खीटै बाबरहर,
 हेकां अमट संग्रामहरी ॥

गीत ६६

महाराणा प्रतापसिंह उदैसिपोठ रौ

राठौड़ प्रियीराज कहै

१

ऊगां दिन समै करै आखाड़ा
 धौरंग भुवणा हसत भणचूक ।
 रघदां उणा रक्त सू, राणा,
 रंगियौ रहै तुहाळौ रुक ॥

२

मोकलहरा, महा जुध मचतै
 धचतां सिरनवीठ बहै ।
 पातख, तूम् तणा पदियाळग
 कधिर-धरचियौ सदा रहै ॥

३

खिठ कारणौ करे नित अळवठ
 खेटे कटक तणा खुरसाण ।
 प्रसणां सोण अहोनिश, पातख,
 खग सावरत रहे, खूमाख ॥

४

ऊगां खुर समौ, ऊदावठ,
 बदे वखू छल बोल विरोल
 खल्लभल भरी तणा, चीतौड़ा,
 चंद्रप्रदास रहै नित खोल ॥

२३।

गीत ६७

महाराणा प्रतापसिंह उदैसिंपौत रै

१

अलकट सुं अल्लां सावरत आंडौ,
आंडौ कहे न राखै आप ।
आंडा बलि राखै खुमाणी,
प्रियमी आंडा तणी, प्रतंग ॥

२

रघदां कक अचूक रातवे,
पल नह कक यिलौडे पाण ।
कके कुंभ-कलोधर राखै,
रेण कक तणी तिम, राण ॥

३

सत्रहर सार अपार सुरंगे
जूटि सार-घर राखण औद ।
सारि मारि राखै दस-सहसौ,
सार तणी अयनी, सीसौद ॥

४

असुरां रोळ पोळ मन आवध,
आवध गहि आतम अरिया ।
आवध धम धरती, ऊदावत,
आवध धारे ऊधरिया ॥

गीत-६८

महाराणा प्रतापसिंह उदैसिधौत रौ

आधियौ पीयौ कहै

१

खट्कै अन्नवेध सदा खेहटतौ,
दिन भत दाखधतौ अन्न दाव ।
अकबर साह तणै ऊदावत
रहै, हियै, खरणां अन राव ॥

२

मह पळटै, खरडकै अहो-तिस,
घड़ दुरवेस घड़ै घण घाय ।
सांगाहरौ तणै आलम साहि
पात रहै, महपत अन पांथ ॥

३

घर-बाहक प्रताप अहुग-घर
सु ज धीसरै न पाखर होर ।
अकबर-उद में साख अहाडौ,
घोयणै सेवग भूप अनेर ॥

४

राव हींदवां तणौ खद-रिप
रणौ आपाणी कुळ-रीत ।
पड़िया रहै अबर भप पांवां,
अदियौ कुंम-कळोघर चीत ॥

गीत ६३

महाराणा प्रतापसिंह उदैधिघोत री

बोगसौ गोखन कहै

१

गयंद मान रै मुहर ऊमौ हुतौ बुरख गत,
 सिबह पोसां तग्या जूथ लायै ।
 तद घड़ी कक अग्यचूक पातल तग्या
 मुगल बहुखोख जां तयै मायै ॥

२

तयै स्रम ऊद असवार चेटक तयै
 घयै मगरर बहरार घटकी ।
 भाच रै जोर मिरजा तयै भाऊटी,
 भाच रै खाचरै चीज भटकी ॥

१

३

सूर तन रीकतां, भीजतां सैख-गुर,
 पहां अन दीजतां कदम पाछै ।
 दांत चढतां जवन सीस पछुटी बुजद,
 तांत सावण ज्युही गयी आछै ॥

४

वीर अथसाण केवाण उजबक घहे,
 राण दयचाह दुय राह रटियौ ।
 कट मिलम सीस, धगतार धरंग अग कट,
 कटे पाखर, सुरंग तुरंग कटियौ ॥

गीत ७७

महापद्मा प्रतापसिंह उदेंसिचौत रौ

१

अधकौ अघ नकुं, नकुं तिख ओखी,
मण्यतां सुकवि करीजै माप ।
दू ताहरा, राख तोडरमज,
परियां खारीखी, परताप ॥

२

अधकौ केम कहां, ऊदावत,
रावां तिलक हींदवां राख ।
तैं सिर नमियां नह सुरताणां,
सांगै बंध किया सुरताण ॥

३

ओखी केम कहां, आहाड़ा,
अकबर कहर तयाँ तप ईछ ।
अकबर सरिस रखां अणनमियां
सुरताणां धंधियां खरीझ ॥

४

कुल ऊजोत प्रताप कहंतां
पोढिम घणी घणा मद पाय ।
कुल नह मणा, मणा नह तो काइ,
मणां न सुकवि बन्नायां मांय ॥

राजस्थानी गीत-गीत

प्रियापति रौ पत्र

पातल भी पतिसाहि बोले मुख हूँत वयण ।
मिहर पक्षिम दिशि भाहि ऊगै कासिपराव उत ॥ १ ॥
पटकूं मुँछां पाण, कै पटकूं निज तन करद ।
• बीजे लिख, बीबाण, इण दो मंदली बात दक ॥ २ ॥

प्रताप रौ उत्तर

तुरक कहासी मुख पत इण--तन सँ इफलंग ।
ऊगै जवाही ऊगरी प्राची नीच पतंग ॥ १ ॥
खसी हूँत, पीयल कमप, पटकी मुँछां पाण ।
पछट्य है जेतै पतौ कलमो 'तिर कैबाण ॥ २ ॥
साग मूड सहसी सको, समजस जहर सवाद ।
मइ पीयल, जीतौ मलां बेण तुरक सँ वाद ॥ ३ ॥

आठा दुरसा रा दूहा

अकबर समद अबाह तिहं इबा दिवु तुरक ।
मेवाही तिय माह पोदण फूल प्रतापसी ॥ १ ॥
दिग अकबर दळ ठाण अग अग भगदे आयदे ।
मग मग पाडे भाण पग पग राण प्रतापसी ॥ २ ॥
घिर जग हिन्दुस्थान छातर रया मग सोम कनि ।
माता भूमी मान पूजे राण प्रतापसी ॥ ३ ॥

कवित्त

आदी दुरसी बहे

अस लोगी अणराग, पाग लोगी अण-नामो ।
गो आठा गवदाय, जिकी बहतौ धुर धामी ॥
नव-रोजे नह गयो, न गौ आतसां नवशली ।
न गौ करोखां हेठ, जेय दुनियाण दहल्ली ॥
गहतौत राण जीती गयो, दसण मद रसणा बसी ।
नीसाण मुक्ति भरिया नयण, तो अउ आहि, प्रतापसी ॥

गीत ७१

राठौड़ राव चंदसेण मानदेवौत री

१

अलंख सेन काई सद्ध प्रासिया भेकठा,
 साथ विरळा सुहद धीत सूधै ।
 चंद गढ सादता निर्मौ अहंकार चित,
 राजता निर्मौ नेठाह कूधै ॥

२

काबिली घाट भुंय प्रासिया कइखिया,
 कितौ कूड़ौ कटक जगत कहियौ ।
 भली तिण जोधपुर त्यार ग्रहियौ भुजे,
 राव भली पूठ ज्ये अनइ रहियौ ॥

३

सेन सुरताण रा साथ सहवर सयल,
 सुमट विमना सुनह धीतधी सांक ।
 मरण तिण दुरंग सागहियौ मानउत,
 धले पइ गाहतै दालियौ धांक ॥

४

मरम तैं मालियौ मेटि पंडर मतौ,
 महर तैं रखियौ तक्त कुळ मीड़ ।
 धन भांगी गमण गंग कुळ ऊधरण
 रोस फस सकस धन राव राठौड़ ॥

गीत ७२

कछवाहा महाराजा मानसिंघ भगवंतदासीत रौ
गोपाल चरनावत कहै

१

निहंसि जोघ गजपतिकलह कोइ मांडै नहीं,
तेग ग्रहि नको मुहि रहै ताई ।
मान सँ अनि पहां किसी मांटीपणौ,
काल आगे नहीं खाख कर्ह ॥

२

कलहि अंजस नको अवर हींदू करै,
आवि अग तुरक नह को उपाई ।
कोपिया मान सँ जोर घालै किसी,
पहुतां अंत बिण खता पाई ।

३

सुर असुर अखियात घात भे सांमली,
लीण दै दीण दोह पाय आगा ।
कहर भगवंत-सुत सारिसौ कवण जु,
ऊबरै कवण जमराय आगा ॥

गीत ७१

कछवाहा महाराजा मानसिप भगवंतदासीत री

भीषण गोपाळ कहै

१

पिढ़ि साभि पठाण, परसि पुरिसोतम,
 पौरिस भगति बघारि अपार ॥
 मान निचीत कियो अकबर मन,
 कियो कितारथ हींदू कार ॥

२

संग्र सामे पतिसाह संतोखे,
 सु पहु भेटि असरण-सरण ।
 बंस बटतीस तणा कछवाहै
 भेटिया दुख आमण-भरण ॥

३

अरि सामे हरि-पांवां आवे,
 जोध विद्वान् अकबर छळ जाणि ।
 बिहुं खीतीस कुळां क्रम-बंधण
 भागां माणहरै कुळ-भाषा ॥

४

भगवंत-सुतन बुझौ त्रिहुं भुषणां
 घण दीहां खगि नाम घणौ ।
 ब्रह्मा विसन महेस बदीती
 तप दंगिम जस तूम तणा

गीत ७४

भाटी राजल भीम हरराजोठ रो

भोजन सोदिल कहै

१

किता कोठ सैखोट चहु चोट अकबर किया,
छात्रपति गया सहि देस छुंढे ।
भीम तसलीम करि दंड न दिया भरे,
महल दर दर रह्यौ मैवास मंडे ॥

२

आप री बेह सुं भीत पिण आपियो,
सबल पण ठाकुरे बोख सहियो ।
हुकम सुं गरय न दिये हरीराज रौ,
प्रस तोगौ खरै द्वारि प्रहियो ॥

३

मिदै, भाजै नहीं, देस पिण भोगवै,
परयते गिरे नहिं छाडि पैठो ।
माखहर माख पिण दियै, छत्र मंडियै,
बरावरि प्रोळ करि आप बैठौ ॥

४

अबर देसां तया बढवडा ऊमरा,
लुलै हींदू तुरक पाह छागै ।
करज रा भरणा किम राय जादव करै,
आफ पिण कियो पतिसाह आगै ॥

५

भीम रै पराक्रम नमौ, सोदिल भणौ,
मिळै अकबर सरिस तेग भाली ।
पधंग गज भेट री घात सद्द परहरे
घरे पतिसाह रै सीम भाली ॥

गीत' ७५

राठौड करवा रायमखौत सौ

आठौ डुरसौ कहै

१

चहुवाणां पछै चढे, रिखां चाचर .

त्रित जो दू न दियत मन-मोट ।

सबजां तगाँ किछुं सागरहत

करतथ, कषा, अणखखौ कोट ॥

२

माज सियाँ तदि राण न मूखौ,

मेखां महुयि पतौ न मुखौ ।

रायमखौत मरणा राठौडां

हायि टळे वाखाण हुधौ ॥

३

सातल सोम पछौ समियाणो

कमधै दीघ न कळद करि ।

इयदां निज कुळ तगाँ ओळंमौ,

माजहरै टालियौ मरि ॥

४

आघा चोर तगाँ, खेदेचा,

माधै रहत घणा दिन मोस ।

मुरघर-मंडणा, तूम तणे म्रित

वेतौ डुरंग स टालियौ दोस ॥

गीत ७६

राठौड़ कस्बा रायमलौत रौ

बाहट महेश कहै

१

मलख माख असुगख रूँठ राख घेढीमखा,
आख ताराख दुनियाख आभी ।
पाढ़ प्रिसणाख खल हाख कीधा कमध,
प्राख कलियाख सुरताख आभी ॥

२

महा महराल भड़साल अरि मंजणा,
अत जे ढाल भूपालि आयै ।
कला करिमाळ करि बाल करि काल फित
जोध जम जाल बगाल जायै ॥

३

धाह वे बाय बल ठाह छाछाड़िया,
काह घाते किया ताह कानै ।
कला अरिदाह हथयाह सिर केविया
महा रिम राह पतिसाह मानै ॥

४

माख कुरु-राख केयाख हय माखउत,
पाढ़ प्रिसणाख सुर थाख आभी ।
प्राख तजियो नहीं दाख पलटोजतै
सिद्ध अवसाख ससियाख आभी ॥

गीत ७७

पाहू भाटी भीम हुंगउँत री

राठौह प्रियोगम रुहै

१

मर सुता नीद ऊपरै, भीमा,
 कक पहे लुंरिया रिम ।
 किम संभरी, तरवार ग्रही किम,
 किम कादो, चाही सु किम ॥

२

पौढिय जु तै कियो, राव पाहु,
 मारथ हूं अधिकौ भाराय ।
 धामै तयाँ दाहिणे बलियो
 हाथ बैर वाहुँतै हाथ ।

३

तन डोलियां पछै, हुंगर-तया,
 सुनै नीद जु तै संभुवै ।
 सारहली चिहुं ठौड़ साचवी
 हेकया जिया घासाया हुवै ॥

गीत ५८

राठीक वैरखक प्रियीराजौत रौ

योगसौ ठाकुरसी कहै

१

चिनडाधि अनेरा जिहीं वैरसल
पछै न वसियौ सेणि पटै ।
दीन्ही कमचज बाहि देवदां,
सिर दीन्ही तिणि बाहि लटै ॥

२

भेका जिहीं कळावे आपौ
तठै न वसियौ घास तिण ।
समपे सु-कर आणिया सानव,
रेखग ते समपियौ रिण ॥

३

जैत-कळोघर तेदि बीजदां
छिलियै साथ रासियौ छलि ।
कमध न रहियौ सहे कायदौ,
कमळ घढादियौ तेण कलि ॥

४

पाळियौ घोब भखौ पीयाउत,
जुदे पाळियौ आंक जुवौ ।
हाथे मिहे आणिया हींदू,
हाथ पड़तां साधि जुवौ ॥

गीत ७६

महापद्म भगवत्पि प्रतापविभीत ॥

१

सांगया दूसरा, भगवत्मा उदेसी,
भगवत्, भगवत् भदियौ ।
हे आसीस तनै दूसरायौ,
नवरोजै ना भदियौ ॥

२

घरचे चनगा तुम, चीतीदा,
पुढप-माल पहरावे ।
वासपयौ न करै दीवाली
ईद तणै घर आवे ॥

३

पातळ रा कळ जाग पताघत,
अदसी रा कळ आगै ।
इळ जस-रात जनमियौ, भगवत्,
जग-रात नह जागै ॥

४

विश्रांगद हव सोह चाढवा
सोह हसीर सरीखां ।
खाखादरा, नहुं लेखवियौ
तिथ मेळे तापिखां ॥

गीत ८७

महाराणा अमरतिथ प्रतापसिंघौत रौ

आढी डुरसी कहै

१

पहिलीइ सयल स जूफे पौरस,
पर दल खुटंती परवंत ।
रौद्रा हाथ न आवै राखी,
आखर पाखरिया भगवंत ॥

२

आगै भोम पड़ेवा अमरी
मेराही न दये मेवाड़ ।
सेठ संघार खड़े फ्यूँ समहरि,
प्रम गुर सिखगारिया पदाड़ ॥

३

कुण आगमै अभिनमौ कुंभी,
पात स भोचन विरद पगार ।
करणा-करणा वणायी कैजम
ऊगर अनडां मार अदार ॥

गीत ८१

शरण अमरसिंह प्रतापविभीषीत है

साँद माली छै

१

पाहाड़ छटै, असमान पाकड़ै,
 भीड़ पूजवै इंद्र मही ।
 तौ जग त्याग पंस खट तीसा
 नागद्वंद्व जेवढ़ा नहीं ॥

२

अनिं अधिपति जंचा उचैरा
 घर हुंतां गिर चढया धुरै ।
 माया रहै बियां मोड़-बंधां,
 अमर, तुहाळी कमर उरै ॥

३

तां हिंदवाणा, ताम हिंदू धम,
 तां हिंदुही हिंदुवह दीस ।
 जां जग-जेठ जोध जोगणपुर
 तीसौदियौ न नामे तीस ॥

४

मिड़ परबत ठोसियां न मात्रै,
 जावौं सिर फोड़े जयन ।
 ऊतर दिगै न दिगै अमरखी,
 मेर ऊपलो नखत मन ॥

५३

कमधज हाडा कूरया महलां मौज करंत ।
 कहजो खानाखान नै, घनचर हुवा फिरंत ॥ १ ॥
 बहुवाणां दिखी गयी, राठौडां कनवज्ज ।
 अमर पयंपै खान नै, सो दिन दीसै अज्ज ॥ २ ॥
 धम रहसे, रहसे घर, सिस जासे सुरसाण !
 अमर, विसमर ऊपरै राख नहंचौ, राण ॥ ३ ॥

गीत ८२

राठौड़ महाराजा बलपतसिंह रावसिंघौत री

१

परम-रूप पतिसाह, संसार पंकज पगे,
 भंडियै छात तिर ताइयां मौड़ ।
 दलवाई नाटसल रिदै ऊपर दिवै
 राति-दिन अगुलता जेम राठौड़ ॥

२

जोवतां यिया मंडलीक चारिज जिहीं
 जुगल हूं राखियौ नको जूषी ।
 जैतसी अभिनमौ खूंद जगनाथ चै
 द्वियै अगुलता ची भांति हूबौ ॥

३

महि मंडल पद्म चै ओपिया मंडली
 ओलंगू अंतरे जिमी असमाय ।
 रिख तय्या ओख पाहार जेही रिदै
 जयर जगदीस चै दली जम-राय ॥

४

तुरक हींदू बिन्दे कमघ पायां तळै,
 तेग बलहीण नव खंड ताई ।
 हुमौ मुनि-वृद्ध लंछण जिहीं करणहर
 महमदया तिमरहर उवर मांही ॥

राजस्थानी वीर-गीत

गीत ८३

बापावत हाथीसिंघ गोपाळदासीत रीं

सांडाइच आसी कहे

१

अवसाण घडे अखियात उजारी
विरद पगार मंते थाय ।
दळपति चाडि विहंडता दुइणां
हाथी मळा चाहिया हाथ ॥

२

दामण वसण सुंड करि दाणवि
नर नरवर नामतो निराड ।
मांडणहरो हुचो रण-मांडण
हाथी हेडवतो हय-थाट ॥

३

घहती विरद मळरि मद घहती
घाग घडा घरियाम विमाडि ।
माल तण सुंडाळ तणी परि
अर भू परि नाखिया उपाडि ॥

४

आपी सांडि चडग ऊपणिये
जण-जण याहे जुवां-जुवा ।
मारे मार महारिण मंहे
हाथी हाथी फटक दुघी ॥

५

पीकाहरो सामळे विजनौ
हाथी हिये न घेठी हारि ।
रिण-रीचल रदिया रिण रोहे,
मांको भुपी मांभिया मारि ॥

गीत ८४

सोनिगरा बसवंत सिंघोत रौ
धामोर ठाकुरसी जयनाथोत धौ

१

सुग पार पखै गा मुक्त जोवंतां,
राजि कन्है रहती दिन-राति ।
आज स हार बिचै ओपावै,
जूना देध, नवी आ जाति ॥

२

आइवि-आइवि जु तैं आगिया,
सु जि जाएँ मै दीठ सहि ।
कमळा तणौ कमळ तो, कंठा,
किम जुड़ियौ, खे पास कहि ॥

३

महि रामायण सीस लिया मै,
आजै ईस सक्ति स धेम ।
जाइ आगिया ताइ तू जाणै,
कोइ न आगियौ, जाणै केम ॥

४

उतयंग इसा अगै ही आणत,
नाथ कहै सांमळि निय नारि ।
वेयणहार न मिलियौ दुजौ
सिंघ-समोभ्रम जिसौ संसारि ॥

५

आप तणौ त्री तणौ आप री
भिड़ि भटनेर पढ़तै मार ॥
सिर बेये जसियै सोनिगरै
दीन्दा मुक्त घडे दातार ॥

गीत ८१

सोनिगरा जसवंत सिधौत रौ

।

१

धरधंग कंठ सीस जसै औपावै
भिल्लनां गढ़ विच सार भर ।
हर-धरधंग तिण देखि धरहरी,
हर इया पड़सी रखे हर ॥

२

यनिता-कमल बांधि गळ बिढतै
हीछोलियौ जु धीरहरै ।
ढरी तेया पारयती देखे,
रखे वमाली भेम करे ॥

३

सीस धरणि चौ गळै माल सभि
सिंघ तणौ विढियौ स जगीस ।
संकर-धरणि देखि तिण संकी,
संकर लिये रते मो सीस ॥

४

सती सोनिगरी मुग धढे सत,
सीयां तणा ग्हे लिया तिणि ।
बायर-कमल न लां, रुद्र फदियौ,
रही डरपती रुद्र-धरणि ॥

गीत ८६

गौड़ किष्कसिंह रायसिंघीत री

छालछ रूपसी कहै

१

कंधरां गुर भेग पयंगै कैसय

खल दाखवती सहसखल ।

रोर न मारे जिके रीझियां,

खिम्कियां किम मारिसै खल ॥

२

ऊच-यहौ राइसिंघ-अंगोअम

आखे राजकुमार हम ।

दुठा बालिद-अदा न तौड़े,

रुठा किम ओड़िसै रिम ॥

३

घे-विघ प्रतिघ अभिनमौ धीकौ

छायौ आवि जस घंस खल ।

रोर गमै उद बालि रीझियां,

खिम्कियां गमै अकाल खल ॥

गीत ८७

बलवाहा धरमल खगातैव रै

१

ति मेघाणे कलै कियो जिम साकौ,
 जुड़ि चीत्रइ मुझी जैमाल ।
 कूरम, तिली नगाय कियो
 तिरे मरण तें, धरीसाख ॥

२

रायमलोन अणायजे रहियो,
 धीरम रौ चीत्रोक धिचारि ।
 विदियो घघे नगलगढ धरी
 तिणि संहार सदै तरवारि ॥

३

कमधज जिम गढ तकै न कूरम,
 विदि भवान रहावी यात ।
 पांच हजार मांज नै पड़ियो,
 आ धरका तणी अखियात ।

गीत वन

अन्नाहा वैरसल खंगरीत री

१

मुड़े किम आविये परय वैरहो मुणिस-भुर,
 भिड़े जिग घडा गज-भार भगगा ।
 सामुही आइ बधि करां जू सांफलों,
 ओहये, काळ, मति मूक भागा ॥

२

सायलां कजलां बीजलां सांफलों
 धीय दे अरिहरां तीस घायो ।
 मुड़े तूं आज तो आज हूं क्यूं मुहूं,
 आव, जम राया, अयसाया आयो ॥

३

सामलां तणी दे भीक आलाह-सिघ
 दुरित तै मेकदल आजि दीयो ।
 पप तणी टाल कीपी नहीं घरड़े,
 काळ री चाल अहि जूक कीयो ॥

गीत ८६

पछवहा वैरसत खगरीत री

१

याचीहा मोर फोकिजा थोले,
नित बरजा पळते नदि भाळ ।
करही मुहिम न कीजे, कूरम,
बलि, बैरा, आयी बरसाळ ॥

२

लिपे घीज चिहु दिस, खागाउत,
मोर मल्हार करे महिराण ।
पावस रित आयी, पाधारो,
दीह घणा लाया, दीवाण ॥

३

दुष्ट आपणा न दीज दाया,
खट मन भूरे मनब खरा ।
बळ सावण आयी, बैरागर,
दित सागर जेमाल हरा ॥

दूहा

विडण तणे दिन वैरइ कयन इसा कहियाह ।
पर-प्यार नाके घरे, रख-प्यार रदियाह ॥ १ ॥

गीत ६०

बछवाह पेसरीसिंघ बैरसलौत रौ

१

अमंग बडौ ऊदार संसार सिर ओपियो,
 भुजे कृतल तणा कालिया भार ।
 जाम री घरा परदेस कांइ जाइजै,
 देख मैं केसरीसिंघ दातार ॥

२

जूणसी चंद प्रियिराज कुंनल जिहीं
 जेम जगमाल रांगार जैसौ ।
 लाम नूं मांगिषा काहू पांइ जाइजै,
 कली बंगसी दिव्य गुटे केसौ ॥

३

फलू...दिसि नै घणी लाबच करै,
 कहै केहरि तके सु-पद फूड़ा ।
 बडा परियां जिहीं आज बैरा तणी
 राज रत्नपाळ दियै घाज रुड़ा ॥

गीत ६१

पणा कारणहिह भमरसिपोत री

सौदो कल्याणदास कहे

५

त्रिजडा हय समय करण, ताहरी
सज्जी दख विहुं विधि साहि ।
अण मिलियो साले उर अंतर,
मिलियो उमर न माये माहि ॥

६

असपत-राय लखै, अमराधन,
परिहंस इयही बिहू परि ।
मा आयो खटके नागदही,
आयो नह माये उमरि ॥

७

पोढा मखन पेलि, फैलपुरा,
अलियो खूद बिहू परि जाइ ।
अलगै रिदो छेदियो आतम,
सफ आयो नह रिदै समाइ ॥

८

मिळतै अणमिलतै, मेघाहा,
लुग सह जाणै जुगो-जुगो ।
सेखु हिय सबल सीसीदो
हे-चै बिहुं विधि साल हुगो ॥

गीत ६२

राधा जगतसिंघ करणसिंघोत री

१

आजे हम जगौ राख अनिबारा
कैलपुरी जाणियां कल ।
तिम-तिम भेलौ कियो सभं व सैं,
जिम-जिम छारी यिये जल ।

२

दाखे करण-तयाँ देसौतां,
घाय जगपनि ऊधोर चित ।
कड़्यौ हुवै हेठौ कीयां,
मनियां मीठौ यिये वित ॥

३

आखे जग-भाणिक आदाही,
देसौतां, ऊवरै दियो ।
जलनिध घणौ सांचियो जग तोइ
थयो अताय अवेय थियो ॥

४

नर नर वै, सायर दिसि निरखौ,
हुवै सांचियो हल्लाहल ।
जौ अंबर घरसं तो, जोगी,
जग पाल नै अस्ति जल ॥

गीत ६३

धीसँ दिया दळपत सगतावत री

१

मेवाङ्ग सणा मै दीठा मनि,
मगटे न दीठौ फहं पाया ।
दळपत उरे सकोई दाता,
दळपत परै हेक दीवाण ॥

२

पाणी पटा घणा मर खाटी,
दग्धारां मद वही दुगाह ।
सगताणी पाछलि सह कोई,
सगताणी भागलि जग साह ॥

३

ऊदाहरै उदैपुर आयै,
तडतर किया सु दनि भदभूत ।
इससहसै दाता दोह दीठा,
राणी हेक, हेक रजपूत ॥

गीत २४

रठौड़ राव भमासिप गजसिपीत रौ

गाइए केसीदास बहै

१

गढपतिधे घण्णा किया गढ रेहा,
परगह 'हँ' जुझिया पद ।
मिम कीधौ भमरेत जडाळी,
किणहि न कीधौ हम फळेंद ॥

२

कोटां मोट घण्णा जुध कीया,
फौजां घण्णा किया कर केर ।
राउ राठौड़ जिहीं सँ राँझां
प्रधपत विदिया नको अनेर ॥

३

कोटां प्राण प्राण कै बट्ठां,
सँ पहरिया दिली पतिसाद ।
भेक कटारी कियो न भेजण,
गजसिपीत जिसौ गजगाह ॥

४

दाखर बि निण पमां तळ दीना,
घणिये मगण दियाळियो चाढ ।
घाही भेकण गग-वसोधर,
जम-दाढां मांही जमगाह ॥

गीत २७

राटोइ राव अमरसिंह गजसिंघीत रो
गाइए केसोदास बटै

१

घतुळो बल अमर न सहियो ओकर,
माहि आलम आगळे सनाढ ।
मुगल फ बोळ पोलियो मोझी,
जडियो तै येगी जम-दाढ ॥

२

गजसिंघीत कमंधून (गादिम
सतखिण माचवियो रिणतान ।
हु-वयण घयण कादिमै हुआसु
प्रिसण परा कादी प्रतमाळ ॥

३

फानां लगे हेरु गौ कु-वयण,
कमंध भलां बांधतीं फडि ।
पूचा लगे भुजा डंड पेली
धाराळो अरि तणै धडि ॥

४

असपत राव सनमुत्र अणिंगळो,
अमर, जु तै वाही अवसाण ।
कु-वयण कमळ याग हंस केची
अ कग नीसरिया आराण ॥

५

सुरत छोद निमो नव-सहसा,
सभियो बोल न खत्री गुर ।
मरण तणे प्रब मला मगिया
अक कशी घडु असुर ॥

गीत ६६

राठौड़ राव अमरसिंघ गजसिंघौत रौ

छाडौ किसनो छूँ

१

घडे, ठौड़ राठौड़ छलियात राखी बडो,
जोरघर जोध जमदाद जम रा।
सछायत दिलीपन देखता साभियो,
अयो तिण धार रा रूप, अमरा ॥

२

गजन रा केहती सिंघ जूमार-गुर,
मणु तजि जगत्र सह हुकम मनै।
पाड़िया तै ज पतिसाह री पाखती,
जान सुरताण दीवाण खनै ॥

३

झकती दिली दरियाव हीनोलतौ
दूकड़े साह अमराव दहे।
आगरै सहर हटनाळ पाड़ी अमर
मादमा रावि दरवार मांहे ॥

४

पगे पहरे जठे हाथ सूं परहरै,
लोह सगि नभो असमान सांगै।
तो जिसी जूभियो नरो हिंदू तुगक,
अमर, अशपर तया तपत आगै ॥

गीत ६७

राठौड़ राव अमरसिंघ गजसिंघीत री

गाढा माधोराव वहे

१

प्रथम मारियौ सनाथतल्लान, किनाई पछे,
मांकड़े सूर रुधे संवाही ।
अमरसी तल्लत पतसाह मुद्द आगळी
धीर रस गाढ जमदाह बाही ॥

२

छात्र साह रा गाजी तखे छावहे,
जपे अण-जण वयण जुआ-जूआ ।
ऊपरी असुर-दल कटारी उभारी,
हजारी हजारी गरद हूआ ॥

३

ऊठ गौ रूद जड़ ताक ग्रहि अतरे,
दाख आतस अर सेन दड़िया ।
सुरदर आभरण तणी प्रतमाल सं
प्रघट उलट पाळर मेळ पड़िया ॥

४

केसरी सिंघ राव मालदे कळोघर,
चाह्या गुर सदा लग घडी चेलौ ।
धीचव साह आलमी जालमी धीजुळ,
मरण मिलिये कियो ताल मेळौ ॥

गीत ६८

एटोइ राव धनरसिप गजसिपीत रो

१

सुरताण हुवौ मैभीत संपेखे,
 गुड़िया घान, सु पड़ियो गाढ ।
 अमर तणा भुज हुतां अंबर
 जायौ घजर पड़ी जम-दाढ ॥

२

बाही गजसिपीत विसरिछे,-
 असुरां फुटा अफर अशी ।
 मुगलां तयौ पड़ी किं माथे
 भिजड़ी तड़ित अकाल तशी ॥

३

हुय हुकंप कांपियो हजरत,
 लागुश्रां परै नीसरी खान ।
 ग्रहमंड अमर भुजा डंड बहती
 बाढालो जळालो घजाग ॥

४

असपति राव चमकि ओद्रकियो,
 खेड़चै बाही करि खीज ।
 सुफरि अकाल हुंत सेजारां
 - वीजुळ विदण क वही धीज ॥

५

जवनां सँ अमरेस जूटवा
 कटारी दामिण करण ।
 खानां घणां तयौ खण खानौ
 ओण रंगी मयकी सारंग ॥

पंक्त ६६

राठोड़ राव अमरसिंह गजसिंघोत री

१

अमर आगरे अलियात उबारी
भड़ जीपण धड़ भरी।
पच-हजारी खान पादियो
पमधज तणी कटारी ॥

२

भूरे रे अगनैणी भूवर
मेह तणी परि मोरा।
जोगण पीठ दिया सहजावी
धूमरि ऊपर घोरा ॥

३

दस-दस पास खवासी दासी,
अपरु-अरणा ओढ़ियां चीर।
सस वदनी नाखे सिसकारा,
भीरा, फदां माहरा मोर ॥

४

पास अलूम गोखड़े ऊमी
कोयां काजळ पीवी।
गळती रात पुकारै गोरी
याचदिया जिम पीवी ॥

गीत १००

राटोइ पल्लू गोपालदासोत चांगदत री

१

अमरराय चाले दिवसि हाथ जाणे अमंग
 चरवर साधि लीधां समेळा ।
 पटै जौ हुतौ पल्लू पतिसाह रै,
 पल्लू भेल्लो हुयो मरण घेळा ॥

२

तण गजण साधि भाराध चित तेघडे,
 तयार भइ मुहरि आगळि रात्री ताइ ।
 असुर रौ विन जायतौ खत्री अनरै,
 अंतरै तत सु ज मैलियो आइ ॥

३

जोधपुर सुपह री चाड मंडे जुइण
 आप रा लिया परिगह उज्रासै ।
 पल्ल रौ खूद धरतणि जुरी पामती
 पूजियो विघन श्री चार पासे ॥

४

मारियो सुणे पतिसह राव अमरसी,
 साह सु मनि जुध भया सारु ।
 मरण दिनि पटो परहरि नवौ मौड यधि
 मुष्ठी जुना पटा साधि मारु ॥

गीत १०१

राठौड़ बलू गोपाळदासौठ चांगवड री

१

पिजड़ ऊठियौ धूरा गिर मेर सो बहादर,
पल्लु रहे कदे अघसाण पाया ।
अमर नै सुरग दिस मेल नै अरुलौ
आगरे लड़ेवा कदे आधा ॥

२

अम्हे तो अमर राजा तया ऊमरा,
जुड़ेवा पारफी थडी जागा ।
घोलियो बलू पतसाह रे घरापर,
मारवै राव री बैर मांगा ॥

३

फेसरवा मांह गरफाग बागा फरे,
सेहरी बाघ हडकाट साधे ।
अमर री भतीजी तोल रग आपन
बलू अर आगरी हुवा बाधे ॥

४

पटा नै नापि मिढ़ साह सें घटागढ़,
काम नयकोट सावौ कदायो ।
पाद कर साह सें पैर प्रग धोदिगौ,
अमर नै मुहरवरि सरग कायो ॥

गीत १०२

राठौड़ बलू गोपालदासीत चांपावत है

१

भिड़ भिड़ फगड़ै कोइ धीर पढ़ै भुष
परमेसुर सुं बाधि पलौ ।
सरणौ हाथ आग रा मंहि,
पंस छतीसं कहै यली ॥

२

ब्रह्मपतियां आखे चांपावत
मंडियां मरख तणौ नीमंत ।
भाजाइयो हाथ भगवन है,
भाजाइो मौ ने भगवंत ॥

३

गोपालौत धरै गढपतियां,
सुरां आ ही बात सही ।
नारायण हाथे नीसरणै,
नारायण नीसरै नहीं ॥

४

कियां अड़प ठढौ कगता सुं,
मागीयखा तणौ सिर मौड़ ।
रख गाढी ठाढी रजपूती
दामठान खाढौ राठौड़ ॥

गीत १०३

राठीर बरू गोपलदासीत चापावत रौ

१

फहर काल लंकाल थलिराय गज केसरी,
जोध जोधां सरिन भेम जूटी ।
सांरुळां हुंत नाहर किनां बिछूटी,
तगसिआं किस हू किना थूटी ॥

२

दुसरी मयंक वृक्षे टळां देखनां,
जोट थर छड़ाळै विष्णु जड़ियौ ।
हसत दीठा समा रीह घाथां हुयौ,
पनग सिर कनां धख-पंख पड़ियौ ॥

३

पाल रा नमौ हयवाढ चहां प्रलंय,
तळिछि सुदर लियौ दळां अणताय ।
उरड पड़ियौ कना गडड अदि ऊरे,
विरड छूटी कना गजा सिर बाय ॥

गीत १०४

राजीव गोकुल स मनोहरदासोत चांपावतरी

य.रहट रतनसो कहै

१

जुग बीता अनंत आंचते जाते,

रानी किसी हमरके लाइ ।

आधी मेल्हि आध घप आधी,

खान तणा हंस, कहै खुदाइ ॥

२

मान तणे सुखि अमर तणाई चित,

अग आछरियो खार अथ ।

घप सार्य आधी अघि बढने,

आधी ही ज ऊढियो अथ ॥

३

खंचिये दम वाह्यो खेदेचे,

मैं पिण दम खंचियो मदि ।

सुधि न रही आपो संभावणा,

घदियो तिम चाखियो घदि ॥

४

मीरां कहै, घात अे न मानां,

मांति इसी गह कदे भयो ।

पाता घात करेने घांसे

रतरे बीजाइ आघ अयो ॥

५

मली मली गोकुल मुखि भारे

मीरां पैठवरं घदि ।

मीरां हंस राखिया मीरां

केठ-राइ सारिखा करि ॥

गीत १०४

गौड अजय वीरलदासौन है

१

ह मुहामुहि हुकम विहूटा,
खूटा पड़ियालां खंजर ।
गजा सांरलां तूटा
जूटा अजय अनै अमर ॥

२

अघखास विचै लुविया ऊलकिया,
धुखिया छोटे मीर धर ।
राजा तया रहै किम रुकिया,
भुकिया बिन्हे पटाभर ॥

३

चफवे तया चालिया चाला,
ढालो करे घणा टलिया ।
दोय दरगाह विचै दांताला
मतचाला घाये मिलिया ॥

४

वीरलदास तणौ मद वहनौ
आग ललहतौ आंकड़ियौ ।
अरि धदियां रहियौ अजमेरी,
पटहय जोधपुरौ पड़ियौ ॥

गीत १०९

रघुवादा महागजा जैसिष महासिपीत री

महिपारिषो पूरै छटै

१

तबे सुझौ पतिसाह, विमृहा छद्दौ लसकरा,
रिण पद्दौ घणी धारां तणी रीठ ।
किम किरै पीठ जैसिष कूरम तणी,
पिथी चौ भार कूरम तणी पीठ ॥

२

लोप दिदुवाण पाताळ अणुलोपियां
कोप असुरां सुरां घणी करतां ।
निज बिन्हे मोर केरै नहीं परम अंस,
फुरै पुङ्ग धरां चौ मोर किरतां ॥

३

तदि हुषी मानहर अडिग माहव तणी
साह मेनाह जदि पदे सांसे ।
कल्लय कल्लवाह वांसौ पल्लट करै किम,
चसुह ची मांड बिहु महां घांसे ॥

४

अडग दिदुवाण परसाद तीरय अनंत
सह आत्म कलम हुषा सखी ।
कूरमा बिहु रण पृष्ठ अणुकेर करि
रेण ऊथळ-पथळ हुती राखी ॥

राजेस्थानी धीर-गीत

गीत १०७

कछवाही किसानावती रौ

बोगसौ गोधन कहे

१०८

भारय मझि मिजे दुमरी भारय

रथ ठांनियो ओवण भरराज ।

उमया ईस उमै आहुडिया

किसनावती तयै सिर काज ॥

२

कत सुरति पेखे बछवाही

हुचो पदम हथ विमुह हथ ।

आहुनियां उतधंग लै आइम,

सकति रूप कहियौ सकत ॥

३

अमुज अमुज-चर नारद श्रीसर

त्रिपति पांच मिलि पांच तत ।

हं सर तिरपति सुज जाणु हरि

त्रि सगति त्रिहं रति तिरपत ॥

४

रद्र-घरणी जंवे, सांमझि रुद्र,

आज खगे तैं लिया अनेक ।

जैसिध-धूय तणी धू जीतां

धंघर मर मो जुडियौ अेक ॥

५

हटि-दरगाह न्याय गा हाले,

ग्रह पांटियो करे विचार ।

सतरमौ सिणगार सिधा सिध,

सिर आधे पूरौ सिणगार ॥

गीत १०८

कछवाही किमनावती रौ

बोगसी गोरधन रहै

१

दध दाधी छेफ, छेफ दुख दाधी,
 किसनावती, कहै सुर कोढ़ि ।
 गंधारी न जुही धारी गनि,
 जुही न धुंता धारी जोढ़ि ॥

२

सूत धन जैसिं सार धू,
 भली भली चिहुं भुयण भणी ।
 मा बैरवां तणी न कियो मन,
 तो जेही पांडवां तणी ॥

३

घत प्रय मइ बिहे तो मिलिया,
 कटिजे ज्यां बसाण किसान ।
 दुरजोधन जिसड़ा दुसासण,
 जुधिठिब छरिजण भीम जिसा ॥

४

पेहर सुर लियां कछवाही,
 मुगति तणै पथ चाली मास ।
 जळी नहीं सुनी कुंता ज्यू,
 रूनी निगम गंधारी रात ॥

गीत १०३

चौदाण सद्गुल समंतसीहोत री

खेतवी लालस कट्टे

१

तर करि फांड खपी, करी फांड तीरथ,
सात्रियां तीरथ धार राग ।
देखी, देखिण-दळां रिच दीसै,
सादूळै कहियो, सरग ॥

२

बठलठि तीरथ विखूं आंगमौ,
दोरी पथ, फळ खाम दुरि ।
देखी रे, चढ़पाण दिप्राळै,
हरिपुर सत्र घट परे हजूरि ॥

३

सुनदो, विखूं करी ग्रनसंभम,
साफी गंगा फिसी मठ ।
सारां विचै, पतार्थ - सादी,
मेहो अमरापुर निपट ॥

४

साम्हो सारि दगिण घट साम्हो
निघदि मुहुरिचाबियां निगट ।
सादूळो पैपुठ गो खर्जो,
पैपुठ मदी न भूखो घट ॥

गीत ११०

राठौर महाराजा कण्ठस्थ सुरसिपात री

बादल चतुरे कदौ

१

१२ धुज्जै गज्जै गयशा चज्जै मेरि निहाय ।
 अरी अलंगे थोदरै चढियौ सुरसुजाय ॥
 चढियौ सुरसुजाय नगारं चोट दै ।
 किर जुगां आदीत बिचै दल घादले ॥
 दाल फरफै पूठ घहंनं मर-भारं ।
 दाल चकै फणि सेस दुधै पार हँयरां ॥

२

हँयरा गँयरा दलिया लीणखसपकर छोर ।
 गोदल-कुंदै ऊपरै पढ़ै नगारं ठोर ॥
 पढ़ै नगार ठोर चढ़ै है चक्रवर्ति ।
 लो खं दुर मुहमेज लहै कुण खप्रवर्ति ॥
 दल धमगा करयोस विधूसण अरि दलां ।
 सपला घादण घोख गडां सिर सम्बलां ॥

३

सपला गढ गंजण सदा मांजण सचला भूप ।
 नरपत्नी धीराण रा राज नवै खंड रूप ॥
 राज नवै खंड रूप विभादण राइयां ।
 छै पाळट्टा कोट लडे खं ताइयां ॥
 महपत्नी कमधज्ज मसंदां मोड़णा ।
 त्रिजहां मुहि तुरकाण तणी जइ तोड़णा ॥

भिजड़ां मुहे सोड़े तुरक नीर्जाड़े मेजाळ ।
 सायर लग घर लंग्गदी भारथ भीम भुजाळ ॥
 भारथ भीम भुजाळ मयंकर इन भडां ।
 सनहर सोरि संघरि उपाइया अणडां ॥
 मिहने दोइ पतिखाह सणा दळ भंजिया ।
 तै छळि साहजदान भगंजी गजिया ॥

गढां अगंजां गंजणा मिह भंजणा अमंग ।
 हुंमर उरि घर हंफकया येऊं घाट यरंग ॥
 येऊं घाट यरंग कमध अयळा यल्ली ।
 मोजां दाळ घगीस महीपत मंडळी ॥
 जैनहरा राजान विया फन जंतसी ।
 फमरे ज्यू दहघाट किया दळ फुतपदी ॥

भंजे साह कुतपदी गह गंजे तिलंगाण ।
 फन्न फन कर आविशी जंगळवे सुरताण ॥
 जंगळवे सुरताण नगारे घाजन ।
 गोवळकुंडी गादि गयंदे गाजने ॥
 मीरजुमलौ आणि समावे सादि नूं ।
 धूरड दविणय देस विलगौ राह तूं ॥

राह विलगौ अगिहगं ग्रहण कारण गज-गाह ।
 देय गिर सरिग्रा दुरंग येठी गिले दुयाह ॥
 पंठी गिने दुगह अगंजी छम तिर ।
 राजा आरंभ राम कि चीर्जी इह गिर ॥
 सुरताणा सुरताण तिरै राह सुर री ।
 फादि दियाळयां राज अघिरचळ फन्न री ॥

गीत १११

राष्ट्रीय रतन महेशदासीत रौ

महियारी पू यशस बहे

१

पहे करान लोह ओरे जडे बहादुर,
 भेदगर खगारा भेम भाखे ।
 जतन न करे रतन निंद रा लुङ्गरो,
 रतन ईजति तण्ण जतन राखे ॥

२

घरा भद्र लियण खाटे भुजां चारिया,
 घरां विरदां लियण भजे घांजे ।
 साह रा ऊंवरं पहल असि सावये,
 निहसि असि आपरा पहल नखे ॥

३

महा दातार अकार माहेस रौ,
 ठिकरणां ठिकरणा छतौ पाये ।
 भाग रौ कमाई भोगये विया भद्र,
 भाग रौ कमाई रतन पाये

गीत १११

राठौड़ महाराजा बसवंतसिंह मजसिपौठ पै

१

दिली-साह छलि उजेणी पाह खग दाप्रतै
लक्षण ऊखाह अउसाण लाधै ।
जसा चतरथां गज गाह रचि तूं जुड़,
सिंह पतिसाह सैं भैत पाधै ॥

२

बाहुवा कमंध रचि पदां घोळागतौ,
अरीहरि गजती भुज प्रकारे ।
सांकळे मुदिज, गजसाह रा सोंघसा,
साह बालमं दुवै सरिस सारै ॥

३

बेहहतो गजां हू-धाट लागे अटल,
रीठ धागां खगां दुध राहां ।
जोध असराज पूगौ भली जूजवी
सेन रोळे दुहं पातिसाहां ॥

४

बसावे कुंन सकतां घरीं चापड़े,
रौद-घड़ पछाड़े अचळ राखी ।
जीयनां सिंघ महाराज धणियां जसौ,
समर चा करै रवि-चंद सारी ॥

गीत, ११४.

शहीद-महाराजा पञ्चतन्त्रिय गजहिपीत री

१

उमे काविया विरद उमराज खगि ऊजळा,
 भुजां भारण दिली भार मळियौ ।
 पालियौ आंक घोरंग सरिस वाजतै,
 बळेही मुरदतै आंक वळियौ ॥

२.

फीध, तें तिका राघ-राण आणो, वमध,
 रहावया यात तिर दुने पाही ।
 जसा-अखियात अे साहि स्रु जूदतां,
 सार बलि लूदतां पातिसाही ॥

३

गजन रा नमौ तो पराक्रम पन्नी-गुर,
 समर दुहुं तया रनि-चंद्र साखी ।
 आगि दाखे अचळ खूद बड खंगरे
 हुंद करि खूद स्रु अचड दाखी ॥

४

साह कळि सेन-लूदे तखत साह चा,
 बजाडे ओघहर जैत घात्रा ।
 दीपिया ऊजळा मयादा दुवे, दुहु
 राज रा मुज, सुजस, महाराजा ॥

गीत ११४

दाही राणी जसमादे री

१

दिन मांचे दुःख रसुंदवे वमगळ
 पतसाही मझ रोल पड़े ।
 दाही चढि फौजां हलकारे,
 लाही जसवंत तणी सड़े ॥

२

ऊगे दीह जमन चढि आवै
 सुहदां भई लियो यहू साथ ।
 श्रीरंग साह धसे किम आवौ, —
 भागो ही सुगज भावय ॥

३

भाऊ जिसी घरोडा भाई,
 भद जसवंत जेही भरसार ।
 चिमपा लड़ण चलावै चोटां,
 सत्रसल-सु-धी वज्रावै सार ॥

४

पक्ष दुहुं प्रमळ सासरी पीहण,
 जेठ अमर, सत्रसाल जणौ ।
 राणी पाणी धम्म राखियो
 सागौ हिंदुस्थान तणौ ॥

गीत ११६

माई प्रतपसिंघ घुरताखीत-री

१

घुरताण तणा, राख राण सणाहे,
जत्रपट बायी नदी पता ।
जैसळ गिरां तणौ जावंतो,
पाणी तें राखियो, पता ॥

२

सरुसा कटक देखि नवसहसा
बेली तज ग्या छाडि बळ ।
माई तणौ जायतो, माफो,
जग भळ तें राखियो जळ ॥

३

भूटां दीनी फोट भाटिये
मरण विदण्य चो छाडि मतो ।
नवगढ तणौ नीर नीसरने
पाळ दुधौ घेत गाळ पतो ॥

गीत ११०

महाराजा राजसिंह जगदधिपति हैं

१

दल जालै सःल पाग-भल दोमकि,
 राजघट-जल सोखै अल रेस ।
 महिपल सुद तयो डर मांहे
 राणी बड़वानल राजेस ॥

२

आग-सप्त निस कीह अरूटिन
 रिम अण पति न साकि रहै ।
 जलनिधि साद बिचालि अगाडत
 बड पडु भाल कराल धई ॥

३

घटति पडै मह, पूर चढै घण,
 पोरिस तेज जलै पूडाण ।
 सागर अमुर तरुं चण साजे
 खत्री थकल मगल सुमाया ॥

४

किलच तोह नह धये पराक्रम,
 समरि लहरि नन धिये सुख ।
 बडु बल रौद सभद पिच चागै
 राणा अभावी दहण दख ॥

૫

જલિત નીર જગ મીર પ્રજાલે,
અણભંગ ધીર સ ધીરજ ખેમ ।
ઘોરંગ-વાદિ મમારિ ધિર્ધૈ અતિ
જગિ રાજહ દાવાતલ જેમ ॥

૬

અમર-કલોધર ગુમર લિયાં અતિ,
મહુર સપુર ન મેઘે માણ ।
અસપતિ-સાયર કટે આવડે,
રજવટ થડે ન પાયક રાણ ॥

गीत ११

महाराणा राजसिंह जगतन्विषीत री

१

एक-लाखाँ मिजौँ ऊकळौँ दोमभि,
 नेट धेड खग ऐह निपाह ।
 श्री राणौँ सुविते चित जागे,
 पीढे नह सुवितौँ पतिसाह ॥

२

फोटी फटफाँ भटफ फरोटाँ
 ओडाँ धावै नहीं अति ।
 धियो हमीर ओभकै घर तनि,
 परति न जके हमीर पति ॥

३

रलतल जूप यक्याँ रलवल,
 सलसल सेस हुवै समराथ ।
 जगपति सणौँ उणीदै जाणो,
 नीद न धावै खर्दा नाथ ॥

४

चगयाँ माण मळण चौत्रौँही
 राजसिंह दइवाण रुक् ।
 दिन-दिन दुख पामताँ दिलीसर
 सुख कीघौँ तौँ धियोँ सुख ॥

गीत ११६

महापद्म राजपूष जगतसिंघीत रो

१

दिली ऊपरों राजसी राण चदियौ ज दिन -
नयन धरु मालपुर कक नाई ।
धुंग सँ हुयो इंद-लोक सहु धूंधळो,
तप गयो ठेठ अहिराव तई ॥

२

सुतन जगनेस दल फीध आरंभ इसा,
अतुर वा माजलै सहर अचला ।
पुंरदर-मंदरां बीच काजल पड़े,
सदस-फण तया। सिर जलै सयळा ॥

३

हींदवां छात अलियात वातां हुई,
सु ज हुये जेण साखी अरक-सोम ।
धार-धर नयण अकळावियो धुंवा सँ,
धराधर कमळ अकळावियो धोम ॥

४

आकुळत ब्याकुळत चलत नई आंगणे,
पंघ किए भांत आराम पामे ।
सु-कर दे सरर वा नैण मूंदै सबी,
नागशी नाग सिर बड़ा नामे ॥

कविता

भजे सूर मळहळे भजे प्राज्ञळे हुतासव ।
 गंग सळहळे भजे सारत इंद्रासव ॥
 पाणि महमंड भजे फळ फून धरती ।
 नाथ गरुड भजे अह मात सक्तो ॥
 हीलोहळ धुःखटळ वेद धरम वापसी ।
 हुंन बीतोद-पत राण मिले किन उमसी ॥ १ ॥

। राम बीलक्षण नाम रहिया रामायण ।
 ' कस्तुर मळरेव प्रगट भागीत पुगामण ॥
 । गीक मुक ठगस क्या रपिता न करंता ।
 । सरुन सेवता ज्यन मन फरण धरंता ॥
 । मर नम चहो निके सुणौ सजीवण अछरारी ।
 कहे जग राण रौ पूबी पांव कवेवारी ॥ २ ॥

वर्त ११०

बाखुड घोड़ा गरु अमरवत री

१

कहियो नरपान्ठ आवियां फट्फां
घूखि छुडाळ, धरा री धौळि ।
पोळि घडा गज-बाजि प्रामती,
पड़तै भार न छाड़ पांळि ॥

२

राजड़ कियो राख छळ रुड़ो,
कानी री नीसकें बडे ।
अरि घोड़ी फोरण विम आवै,
तोरण घोड़ी लियो तडे ॥

३

आजा पीळा करे ऊजळा
सौंदो खदां कळह सजि ।
करग मांडिया नेग कारणै,
फलम खाडिया नेग कजि ॥

४

वदियापुर सौंदै अजरायब
कलमां हूं माराय कियो ।
एत लेती आवे दुखाजै,
देवळ जाये मरण दिदी ॥

गीत १२१

भोंसला राजा सिवाजी साहजीवीत री

उपाध्याय धर्मदर्शन नई

१

सकति पाइ साधना, किना निज भुज सकति,
 घडा गढ धूमिया वीर घांक ।
 अयर उमराव हुण आर सागौ अढ़,
 सिवा री घाक पतिसाह सांकै ॥

२

असर करता तिके असर राहु खूंदिया,
 जीधिया तिके त्रिगौ लेइ जीहै ।
 सप्रद आगज तिवराज री साभले
 बिनी जिम दिली री घणी बीहै ॥

३

खहर देखे दिली मिले पतिसाह स्रं
 खलक देसत सिचौ नाम पारे ।
 भावियो घले कुसले हले आप रे,
 हाथ घसि राखौ खजरत्ति हारे ॥

४

बहर मेळां खहर उहर बंद पाटिया
 खहर दरियाव निज धरम खोच ।
 हिंदवां राइ आर दिली लेसी दिने,
 खल्ल मन मांदि सुरसाण सोचे ॥

गीत १२२

राठौः दुरणादास आसकथीत नै

सोनग बीठलदासीत रै

आसिधौ गांधीदास कहै

१

दुरंगदास सोनंग पुहुं गींच ग्रहियां दुजड़
कथन पतिसाद नै यू कहावे ।
जसा रा डीकरा घिना गढ जोधपुर
खत्री अत खसै सु ज खता खावै ॥

२

आसकन तणौ धीठल तणौ कहै इम
पत रूपाळ ग्रहियां पढ़ग प या ।
राज रौ थापिया राजन जहे, रमर,
घणी म्हे थापसां जिक्की जोधाण ॥

३

भीर म्हे जनां जना भीरी विसमर,
गांन कुण सकै जसराज रा गाव ।
राय बेक थापि ऊधापिया रिड़मलां,
रिड़मलां पुड़दड़ी राखिया रान ॥

४

जके भड़ छेड़ खोसाड़ अकथर जघन
हाथ है हिया हत हणिया ।
पाम जोधाण अक् सीग फल पामिया,
साद मोकाळिया जगत सुणिया ॥

गीत १२१

गठोड़ महापद्म अनूपसिंह काण्विधौत रौ

१

मैं बाल बिलौ कहत हौं ते ऊपर मिथी,
 प्रधल पग छाँह फल खुगो पावे ।
 मागिबड़ किसन तिम खूर रे पौतरै
 बने खट ही बरग रखा आवै ॥

२

हले चले हुनी माखवि मनब हासिया,
 भुयग मुर दिने, घर आब भिल गा ।
 मिथी चौ न,ध कवि पात धेळा पड़ी
 बड़े तरवर कुंवर पचे बिखगा ॥

३

दसा दूणै समति सुकवि दस देस रा
 बयारि भुज धयी जुग पलटि चाखे ।
 हंसजे नवै निध पाष पत्र सेवता
 बंचे साखां विरग करण पाळे ॥

४

खुपा जळ थोळ पछि बरावर होइ बलक
 मनि भिसन साम ते अदिन माया ।
 कळप प्रल कमध छाया करे कवियणां,
 ऊबरे जिता धीकाण पाया ॥

गीत १२१

राठो॥ दुरगादास आसकण्योत ने

सोनग धीठलदासीत पै

आसिधौ पांसीदास कहै

१

दुरंगदास सोनंग दुहुं भीष प्रहियां पुजइ
कयन पतिसाद नै यूं कहावे ।
जसा रा डीकरा विना गढ जोधपुर
धत्री अन कसै सु ज सता पावै ॥

२

आसकन सखी धीठल तखी कहै इन
पत रत्नपाल प्रहियां खड़ग पाय ।
राज रौ थापियो राज न जहै, रघुन,
घणी म्हे थापसां जिकी जोधाण ॥

३

भीर म्हे जगं जकां भीरी विसंग,
गांज कुण सकै असराज रा गांव ।
राच धेरु थापि अथापिया रिद्धमलां,
रिद्धमलां पुइदड़ी राखिया शन ॥

४

जके मइ छेइ खोसाइ अवयर जयन
हाथ है हिया हत हथिया ।
पाम जोधाण अद सीग फल पागिया,
साइ मोकालिया जगत सुगिया ॥

गीत १२१

राठीइ महाशाना अनूपविष करणसिपौत री

१

मलै बाल धीसौ कहत ही भे ऊपर मिथी,
 प्रघल पग छांड फल चुगौ पावै ।
 प्राणिवड तिसन तिम सूर रै पौतरै
 बनै खड ही बरशा रखा आवै ॥

२

इले चले दुनी मासवि मनव हासिया,
 भुयश मुर डिगे, घर आम मिल गा ।
 मिथी चो नथ कवि पात वेला पड़ी
 बदै तरवर कुंवर पक्षे विजगा ॥

३

इसा दूरी समति सुकवि वस वेस रा
 ब्यारि भुज धणी जुग पळटि चाखै ।
 क्षपत्रे नवै निध पाव पत्र सेजते
 वचे साखा विरख करण शक्ति ॥

४

खुश्या जल थोल पधि बरावर होर कलक
 मनि तिसन साम वे जदिन माया ।
 कल्पप्रथ कमप छाया करे कवियशा,
 ऊपरै जिता बीकाण आया ॥

गीत १९४

पठौक पदमसिप करणसिचौह ते

१

अंशनास विचै पाणास आछटे
कहर पदम धम जगर करि ।
मोहण माण किया मारदण
भेकण घाण छट्टक अरि ॥

२

करण सणै घिटतै यंघव कज
खलदल कीधा यार अघ ।
पाव अरध, अग अरध पाकती,
माच अरध अंग, सीस अघ ॥

३

रीदां भांजि ऊगळीं कनी,
घैर घालि, उजगालि घट ।
पग निरलंग, निरलंग अंग-पड़,
धुन निरलंग, निरलंग अकुट ॥

४

भाई घाड करण रण सिद्धते
अरि साजे खार्गा अमळ ।
वरणां विण लोटै घट चौराग,
कर विण घट, घट विण कमळ ॥

गीत १११

रही पदमपि करसिपीत री

१

घायो बहु खेत-पहुँचो घप घूमत,
 : सुघ-हीरे कीपी सिरसाह ।
 ऊँठे पदम गिरते जावम ने
 गोडां तल दीनी गजगाह ॥

२

मन ना री मुणजे, मुरधरिया,
 सुख रीभां देखा दध खीर ।
 आवै काम पदम आंटीवे
 मारि लियो टीकायत भीर ॥

३

करि शुध घरा रखा करनाली,
 बदखोरी आयो चदि पाढ ।
 घोड़े हुंत लियो भलि घांरी,
 देखत पार करी जमदाह ॥

४

मैगल तणी समापण मौजां
 सकथां रखां नहीं संसार ।
 अरसर भर जादू रं अंग मे
 कर जुत मांही रखां कटार ॥

५

भुरसी निरधण अणल हजारों,
 रीभां दियण सिट्टे दोय राह ।
 पड़ते पदम कमंध पशोघर
 पाड़ि लियो दिखण पतिसाह ॥

गीत १२६

श्रीधरी गोरक्ष मूलाणी री

गद्य गोरक्षन कहै

१

मिले घाट विखमौ कलह जाट खोहा मिले,
 बाज गुण चाटरे घाट बाग
 ककटे काट नीराट अधियामण्यौ
 काट कड़ जाट सिर फाट बागां ।

२

पदम मुख आगली द्युषियां पधारण,
 धधारण खड़ग धड़ करण पाधार
 बलाबल बाज नै महा रिया बाजियौ,
 सार रशौ सिर सांघण्यौ सार ॥

३

विजड़ अघभाड़ खल पाड़ जमदाद घख,
 विटे अवसाण कीभी बढाळौ ।
 फाखरां चाचरे हुवौ रिए फावियो,
 चौधरी जरां लोह धाळौ ॥

४

मूळउत जीवतां संभ हल मोहरी,
 - दन खड़ग राधतां तयौ दावे ।
 गहण रिया बाज थू रया पटा गोदड़ी,
 पटा मोटा भला जाट पावे ॥

- गीत १२५

राठोष चदेसिष हरनाथीत कामचीपौठ री

छाई बनोसिष कहे

१

मड़े भुजां असमाय, जरदां कड़ा ऊपड़े,
गढ़गड़े तंथागळ, मड़े भुरजां ।
ऊदळा तणी घागां जठी ऊपड़े,
भाजि गढ लइहड़े, पड़े भुरजां ॥

२

बाप सुत बाधिया बाळ भुज नीमजै, -
छुदया जम जाल खंकाळ जूटे ।
जोध किरमाल गहि दाळ औरे जठी, -
तठी पदि गाळ भुरजाल तूटे ॥

३

गजां रत पोट, पकि चोट तंथागळां,
घचण अरि ओट खे विसा धीसे ।
घजघड़ा गहे मन मोट ज्यां सिर घसे,
दघाळा कोट सेंलोड दीसे ॥

४

मतंग-पळटण खगां निहंग छिवते मखरि,
प्रयीपति अभंग भुज तेया पूजौ ।
छुरंग भाळां लियां जोघ नवसाहसौ
दुरंग घांका लिये कमौ धुजौ ॥

गीत १२६

बीहण पीठसदास भबळवत री

क्याय लिखमीदास कहे

१

हुं बाद मातो कहर साह धे देखवै,
 मार पड़ियी कहर गग्रा भारी ।
 रैस कह, पीठजा, हाति घर दिसि वजां,
 सरम कह, पीठजा, राजि सारा ॥

२

केहरी तया जमराण मचते कहलि,
 हुये कर जोहियां मदी दोही ।
 पुकारे जवानी, नैस दिस प्रघारी,
 राजि बाहै, समै राजि जोही ॥

३

धमंग मळरीक ह्या मांति सुं ऊचरे,
 मुदौ मादरो जरी काम माये ।
 रैस हंतां वछौ, राजि अपहर धरी,
 सरम, ये ह्यौ रंजोऊ साथे ।

गीत १२६

बीहण बीठलदास मचळवत री

ज्यास छिपनीदास पदे

१

हुई पाद मातौ कहर साह पे देखये,

भार पहियो कहर तत्रां भारां ।

रेस कह, बीठला, हाजि घर दिसि यजां,

सरम कह, बीठला, बाजि सायां ॥

२

केहरी तया जमराण मचतै करलि,

हुमै कर ओढ़ियां बड़ी दोहां ।

पुकारै जनानी, नेस दिस पधारी,

ताजि बाबै, हमै घाजि सोहां ॥

३

अमग मछरीक हण मांति सुं ऊचरै,

भुदी माहरो खरी काम माये ।

वैस हतां पछौ, राजि अणकर घरी,

सरम, ये ह्वौ रंवचोक साये ।

गीत ११-

श्रीहृषीकेश नारायण विष्णुशरीर श्री

१

कलि घालि लकाळ कटै इम केहरि,
विठिया कजि ऊछजि केराय ।
घलिये दळे विमुद्धि कयूं चाखूं,
घलियो विमुद्धि नको चहुपाय ॥

२

घोरंग खले नहीं अचलाउत,
भाड़े प्रिये दिये खग-भीक ।
मुड़िया दळ देखे नद मुड़ियो,
मुड़िये दळि मुड़ियो मळरीक ॥

३

कळदि सीह गयूं सीह-कळोघर
निडर निहसियो घाघे नेति ।
कड़िया दळ देखे नद खड़ियो,
खड़िये दळि खड़ियो दिख-खेति ॥

४

भागां साथि न भागौ कयाभंग,
आप विठे भांजिया जरि ।
केहरि सरनि पहुती अणकळ
करनदरी अखियात करि ॥

गीत १२१

कसबाहू धुगणविष रगमविषीत सेखान्त री

१

बहीं धाज जैसिध, जसराज जगतौ नहीं,
 दे गया पीठ सह कर्त्री दूजा ।
 मधी पाळठ कुचै, पाठ मिंदर पट्टे,
 साद मोहया परै, आय सुजा ॥

२

मदय-सुन गजन-सुत करण-सुन सुगत गा,
 रिधू अन परिहरे धरम रेखा ।
 सांकड़ी घार अन राख, तो सुं रहै,
 सरम मो परम ची, बिया सेखा ॥

३

मानहर भाजहर अमरहर धीसमे,
 अन पदु औसरै नको आया ।
 असुर दल ऊपटे, बाज हूँ ऐकली,
 जुड़न फज पधारौ, स्याम-जाया ॥

४

साद सुण मेहरी बांधि सिर ऊससे,
 परब मर धळतौ जिसौ पापौ ।
 वाद सुताया सुं बांधि यग न हनी
 याद करतां समी अगै भायौ ॥

५

पाड़ पतसाह घड़ सिधाड़ां पीदियौ,
 देव-मंडल सरी नको दूजौ ।
 मार मेळया घड़ जोन सुजी मिले,
 पयर पाड़ी तथा कोइ पूजौ ॥

मूंफता जगहा ऐ

धरिणी एनी पदे

१

धरु अहरण रतन जसै धण धये
 दोमभि कमे कसनटी दीध ।
 सोवन जइत जितां नह सोभा
 छोह खगा भग सोभा लीध ॥

२

धीयी जुड़े मूंघड़े कूरम
 जंठु रार घप जुग जुयी ।
 धीमत छाव फतावन कहना,
 हमे रतन फोडीक हुयी ॥

३

रजघट पण पाणी राखेरा
 मिहि अहरण रण गयी न भाज ।
 नकसां छोह खगा नीरदियौ
 रतन धनै जदियौ जसराज ॥

४

पदियौ जसे जगहरी पानै
 पगलि निरखि चादियौ प्रमाण ।
 धायै हीट्ट सिंघ ओदियौ
 आडौ रतन चडै अचसाण ॥

५

छोह कुदण करि जसै चजायी,
 दीनौ लाभ सु-जम जगदीस ।
 गोहणी रतन अमोबक िथियौ,
 'सुज धरियौ दुहु रादा सीर

गीत १११

राठीइ छाडिपि बदली-राघर री

१

फटिछा ऊठ, सताराय'ला ।
तो ऊपर बागा तिरमाळा ॥
नाह बाघ जागो नींदाला ।
फटिजे फटक आविया फाला ॥

२

छाखी घाती करि हठ लागी ।
आयो खडि सुयायत आगो ॥
घाणू तणू नगारी बागी ।
जागो, भइ कमघजिया, जागो ॥

३

भइ प्याला पीयण बणमोला ।
मिलम साज अंतरा पइ भोखां ॥
दार्ज खडो हुरि, सुण दोला ।
पांका भइ, ऊठो, बढये, खा ॥

४

छिन-छिन घाट हेरना छाया ।
हुय कळदळ घोडा हींसाया ॥
अणचीत्या बैरी अणमाया ।
ऊठो, पीर, पत्यण, अत्य ॥

५

चबरा घेण सुणे चढ़घायो ।
अंग असळाज मोढ़नी आयो ॥
हुलाचन ईसर दरसायो ।
जाणू फ सुतौ सिध जगायो ॥

६

कपूर वस्त्रां भायौ रण पाळौ ।
पांघण भावै मोद पिवाळौ ॥
भुङ्गुं पकड़ ऊठियां भाजौ ।
लेश भचक ऊठियां खाखौ ॥

७

घटा घोर शंख घण्टरिया ।
पीछां पर भडा करहरिया ॥
फौजां तणा हगोळा फिरिया ।
झोळा जिम गळा पोररिया ॥

८

अधपत हाथ दिवाड़े आळा ।
मिनडां कलम दिया भइ प्राळा ॥
सप्रवा सार चबाड़े साळा ।
पांघुं हळा भाजिया पाखा ॥

९

प्रथमि तणा सुणायी रजपूनी ।
छुग दे अरथ धोती हुय जुतो ॥
आस्रम चौथे परव अछूनी ।
सर-सेज्यां मीलम जिम सुतो ॥

१०

जूनी धइ मिलतां हइ जूनी ।
पूनी सिध सांजळा सूर्गी ॥
हूचां सीस पछै गढ हूगी ।
छूट्यां प्राण पछै हठ छूटी ॥

[३]

गीत ११४

छेडा खंगार है

१

खंदाणिया धीर धमीर न खंचळ
कुंघर भंडार न चिन करिया ।
माहय समा संगर सरण-दिन
सोयण सुणि जी संभरिया ॥

२

सोना कळत्र साजहू साकुर
गिया वेपडत न अनि ग्रहिया ।
पूगै दीह खंगार प्रियी-पुड
कहतै हरि चारण कहिया ॥

३

कखन पूव असि गरथ कुणै रा,
सोटे छंत धीसरे सवि ।
मुगति बाजि संभरियो माहय,
कीरति कजि संभरे कवि ॥

गीत ११३

धीरज खगार रायपाळीत री

१

बापिशा ज्यां कमळ कीरती कारणा
 अत्रिगं आगे, कहे धंगार ।
 कलि-जुग तया संतोखी कवियण
 करे गरथ दीने कै धार ॥

२

सुन रायपाळ कहे दिसि संचगां,
 तिर साजे सौभाग सुणी ।
 गरथ वडे जस धोलै गुणियण,
 गरथ तणी काइ खोम गिया ॥

३

आप्या सीस सु ती ऊपरिया,
 घसुधा घांवीजे घड गात ।
 सीधज कहे, हमै जस सुलमी,
 गरथ सटे धोलै गुण पात ॥

४

एसहंतरि घड पात विचषण
 धीर वळोघर गरथ विचार ।
 सिगळी सु-जस लियो राइ सीधज
 खट धन फीया " धंगार ॥

गीत १२१

छोटेछी बैषद रौ

१

भंगवाट हुहेली पुच्छमट भारी
 धरी ऊक घनोज मत ।
 जैचद कहै, जीविया जग पुटि
 पनरह ऊपहरा परत ॥

२

घनमी पुछ वाचही न आणै,
 जख नमिदां तथा पाणी जाइ ।
 पांचावत जीविया न पड़खै
 मय खट घरस ऊपरै न्याइ ॥

३

वेरदशाहरी घट मुंह फटके
 व्यापधा मुहहै डूयो अछे ।
 जैचद कहै, निमय नद जीव
 पांच अने एस घरस पछे ॥

गीत ११७

दौलतमान नारायणदासीत री

राटोंक प्रियीराय कहै

१

दामणि परि ग्रहे सासरे दौलत
 अयला मये न रहियो ओले ।
 घाबलियालि तयो छलि घायो
 परिहरि पहिरणहारि परोले ॥

२

सासरियादि नारयण संभ्रम
 साही चाख न रूणो सादे ।
 लोपड़ियालि तयो रस लाया
 चूनड़ियालि न चादे ॥

३

रेयंत घूठी राय राटयद
 घाबंदि छेह यियो असजरी ॥
 खोटाउचा मणे घंसि छागो
 काजि मजा तजि रामनंदापी ॥

गीत १३८

मारी दीहवसिप मुरताणौत मालदेवौत ऐ
घोसियो मूळी कौ

१

भदइ घाज गोळा उरइ थळेचां ऊपरा,
भदाभइ घळोवळ राग भदफी ।
भरी-घइ ऊपरा दलै अस छोरियो,
कइदियो आम, काय धीज कइकी ॥

२

घमक घमक मचे, सोर गोळा घमक,
धीर डक घंक चक तेण वेळा ।
साकुरां घमक सुरताण तण सनां सिर,
चमक आकास, अक कइक चपळा ॥

३

अठठ पइ उंडाळां चठठिया पाण अत
खाग भट्ट विकट घट पळां सिर छीज ।
तेमळे दिये कर रठठ भेळे तुरी,
घोम पुइ कठठ, काय भटफती धीज ॥

४

कांटकूटी मये, जोगणी किलकिले,
ऊपटां घटां अरि भार आयी ।
गयण कूटी, कनां भिइज कीधौ गरक,
धीज सूटी, कनां सेल आयी ॥

५

पाग खिच दामणी दलौ सिंघ अधीखेम
जीवता संभ जस-गत जायो ।
माण मन अचंभै, ताम साह्यौ भिइज,
आम थांमा दिये कुसळ आयी ॥

पञ्चम्या की वीर-गीत

गीत १३६

भाटी बदरीसिंह न अनोपसिंह पिरागद सोठ है

१

मिलि मायां कियो मतो मा-जायां
 छल छल छल जायां बुरित ।
 गायो गयां जीवियां पुण गत,
 गायो खारो मुरां गत ॥

२

सभियां खाग पिराग-समोन्नम
 साची कहे चरते सार ।
 विन लीजे ऊमां घादखवां,
 हाणति उवां घादखवां खार ॥

३.

बदरे अने कही घांतां विह
 छित सुरां दैयां मरण ।
 " " " "
 " " " " " " ॥

४

प्रय-प्रव किया जादमे प्रामा
 खाभा मांटीपणो जयी ।
 भारय घट पड़ियां कटि भाया
 गाया घट खुंदती गयी ॥

गीत १४०

राटीइ मानसिप नै बैछीदाघ री

छांधू जगो बहै

१

ले रा पोल उपगार सँसार ऊपर सदा,
काम पहियाँ करै दूक पाया ।
पटां री लाज सहु फोड़ आवै प्रथम,
(छं) अणपटां घरा बै काज आया ॥

२

है-याट एंकता राग होंगोलहर
गजे धरा गया भरि लोथ गाहे ।
ऊखटां पटां जाडां घटां ऊपरां
विसर चढिया कहर छोड़ बहे ॥

३

लागट-सुत धमर सुत नाम राखण जरै
सरु जस धोलिया सुर साखी ।
दूक जाडां थंडां भूक छल दाहिया,
रुक रजपूत-घट भली राखी ॥

४

सुध तयाँ भरोसौ अगै ही जाणता,
कमध राग घाल घरचाळ करता ।
मानरो बैरा फौजां तयाँ मौझी
पाजि बैकुंठ गया डार भरता ॥

गीत १४१

पड़िहार रामरी रो

हरिसुर कहै

१

राह चूकै बात राजसी राउत
सुज अखियात यहे संसर ।
धड़ ऊठियो ज सभिये धजयढ़ि
पड़िया कंध पछौ पड़िहार ॥

२

के अखियात भगदर ओपम
कळहि दुअंगम सयळ कहै ।
षप सिर संधि यहे वीजुनळ
यर प्रियार्थ सामुही यहे ॥

३

जेठी-संधम जगत्र सह जपे
धन धित सूरज साहस धीर ।
पंडि हुंता उतंग पाळदिये
रुत्र साहस क्रम दिये सरीर ॥

गीत १८२

भैया सांगा रो

कल्याणदास जगदावत कहे

१

बढ़ि सांगी तणी मरोसौ करसा
तीन चशर खागी तरयारि ।
सांगला तणी फटारी साची
मारणहार राखियो मारि ॥

२

बहिये जगि पछे उर घाही,
जीर ऊकसी मोर जुई ।
भैया तणी जडाळी समहरि
हुनते चूक अचूक हुई ॥

३

पड़ती बाध साथ पळटंते
हाथ बलाणि बलाणि हियो ।
मारण मरण मारके मरणे
कूड़ ऊपने साच कियो ॥

४

रठ पड़िहार समार अखाड़े
लिप भुज बहे फटारी खाग ।
मुष्ट करि राग पाटियो मैली
बनुताणी गायो सुजि राग ॥

गीत १४३

निराख सीहा री

१

पग मांडी, मढ़ां, न जायो पाछा
 अरि मिलियां, पणियै अवसाण ।
 अतड़े अतै भड़े ऊतरियो
 न चढे नीर, रुंदे निरयाण ॥

२

समवे अम सघर नर सीहो
 करिमरि धूयांतो सु-परि ।
 पानी गयो न बळही पाछो
 पहां परवतां अक परि ॥

३

सामि सनाह बियां दिस सुपहां
 भड़ मांखनी अम मति ।
 कतियूं नीर न पनियूं काहो
 गिरां मयं अकाज गति ॥

गीत १४४

राजीव हरपाल देवराजीत री

आखिनी हूँ न दे

१

काळी निस पाण खिलै नर कायर
 दल आयता गिणो घुरवेस ।
 घणिया पिय भला नार घूँई
 नेउहते आपाणा मेस ॥

२

असुर तयो आयात्र ऊपर
 राज राखिया हुँ न रखपाल ।
 जीपां तण पुराणा खोजइ
 हिया न ऊतारै हरपाल ॥

३

लायर तयो सरस साई दल
 मरिषा खलण माँडिया मेद ।
 माम्मी मेर नगो मोर घली,
 बिदिषा रहियौ फाँटा घेद ॥

४

अङ्गपायसी अङ्ग आपाणी,
 फड़िल बराह संग्राम करि ।
 सुहंगा फाँटा तण सेरहे
 सुहंगा दीया भखा मरि ॥

गीत १४६

राजेंद्र हरीराम ऊहड़ रौ

१

आलै हम हरी कळप मल ऊहड़,
 सिर मुहंगा बांधै झार सुत ।
 तरवर हुवै जिसड़ा विन पातां,
 पातां विन तिसड़ा रत्नपूत ॥

२

दळ सियागार कहै गोइउत,
 धिरजस अथिर कळू थावंत ।
 जिस-छाया आचारि खत्री धंस
 पातां सुं सोभा पावंत ॥

३

घनि त्रिणा धरा सरीखा ऊहड़,
 जगि पातां घनि बारि अका ॥
 राखै हरी आखै यह राउन
 पाटां लिख आसना थका ॥

४

तरवर सदा पुराणा पातां,
 धार्या नवा पखै विण धान ।
 छव-आणग सु-धिरख नव-सहसा
 पूज नवा पुराणा पात ॥

अनुपूर्ति-गीत

गीत १४६

महापति साबुलबिहारी री

१

घर वूठी साबुल भूप धीकघर,
 आखंड-सरे उमगाणी ।
 मन-मन में नव अंकुर उमग्या,
 अंगलघर लहरायो ॥

२

नाचे सारंग, सारंग बोले,
 सरंग बातूकारे ।
 धीकहरा जीयया वूडेतां
 सुधर टट्टका भारे ॥

३

धामे घर-घर रहस बधाई
 तो वूठां धोकाए ।
 सीज तणी तिबहार सदांरी
 धीक तणी घर माये ॥

४

कुलवट-पालन करण-समोध्यम
 बहु मौझां घरलावे ।
 सायया धीकानेर सुरंगी
 बाहुं भास मनावे ॥

પ્રતીકાનુક્રમણિકા

અકબર સમદ અયાદ	...	૭૦ દ.
૧. અકબર ન જુજઠઝ મીવ ન અરિજણ	...	૪૧
અજે સુર મલ્લદલૈ...	...	૧૧૬ ક.
૨. અદ્દ ઘાજ ગોઠાં ડરદ થલેચાં ડપરાં	...	૧૩=
૩. અદે મુજાં અસમાણ જરદાં કદા ડપદે	..	૧૨૭
૪. અતુલીયલ્લ અમર ન સહિયોં ઓકર	...	૬૫
૫. અબકો અવ નફૂં નફૂં તિલ ઓઢો	...	૭૦
૬. અપૂર ઘાત સાંભઢી એદો	..	૧૫
૭. અમંગ ઘઢોં ડરાર સંસાર તિર ઓપિયો	...	૬૦
૮. અમર આગરે અલિયાત ડયારી...	..	૬૬
૯. અમર રાવ ધાલેં દિવસ	...	૧૦૦
૧૦. અરધંગ કંઠ સીસ જસે ઓપાવે	...	૮૫
૧૧. અરિ - નાર ઘદે મરતારાં આગે	..	૧૦
૧૨. અવસાણ ઘદે અલિયાત ડયારી	...	૮૩
અસ, સેગો અણરાગ...	...	૫૦ ક.
૧૩. અસંજ સેત ઝાઈ સદ્દ આસિયા એકઠા	...	૭૧
૧૪. અસુરાં સું કિયા કર્મલ અસંકિત	..	૧૩
૧૫. અંબલાસ વિધે ઘાણાસ આઢે	...	૧૨૪
૧૬. આલે હમ અગોં રાણ અનિ કારાં	...	૬૨
૧૭. આલે હમ હરી કલ્પ-મલ ડદ્દ	...	૧૪૫
૧૮. આયાં લલ સઘલ સામદો આલે	૬૪
૧૯. આંટીલા ડઠ સતારાધાઢા	...	૧૩૩
૨૦. દરરાહિમ પૂર ઢિસા ન ડલે	...	૩૦
૨૧. હમ કહે મહેસ ઘદે પ્રવ આલે	..	૩૮
૨૨. હમ હઝિયાં તયા ઘેંત ગિહું આઢા	..	૩
૨૩. હાંલા ધાંતોદ સદ્દ ઘર આસી	...	૯
૨૪. હમે કાશિયા ધિરદ અસરાત ધમિ ડઢઢા	...	૧૧૬
૨૫. ડગાં ઢિન સમા કંટે આઢાઢા	...	૬૬
૨૬. ડગાં ઢિયાં રાત ડેદયાં ધંચર	...	૧૨

२७. कवि बांधी तयाँ मरोसी करता

कमधज हाहा कूमा

...

२८. कर भेरु कणै कर वियै कटारी

...

२९. कळहेघा चूक कुंभकन राणी

..

३०. कळि चालि लंकाळ कहै ईम केहरि

...

३१. कळी सेत वन पाळट पदै जोखिम कळस

..

३२. कहर काल खंफाल बलिराघ गत्र केसरी

..

कहां राम र्हा खखण

...

...

३३. कहियौ नरपाल धावियां कटकां

...

३४. कहिस्यां तो तूम भजौ करणाकर

३५. कहै कंथ नू दुहं पुल ऊजळी वामणी

३६. कंघरां गुर भेम पयंपै केसव ..

३७. कालि कालि वन कीधी काया

..

३८. वापिया ज्यां कमळ कीरती काया

.

३९. काली निस पाया विस नर कायर

४०. किता फोट सेंछोट चढ़चोट अकरार किया

४१. कुंवर कासीस कळि मूल करि मन्त्रियां

.

४२. केकाण अरथ ऊतम धूमकन ..

...

४३. खटके खत्र-वेध सदा खेड़हतौ

...

४४. खरै खेत खुरसाण रा पिसण हुप पाहुणा

.

४५. खळकट खू सदा सागरत खांडी

४६. खंडां सख मेर पवै खूमाणी

...

४७. खानाणे खडे खड़ग बल खाधी

खुसी हूंत पीयल कमध

...

४८. गजरूप चढण अग रहण असंभ गति

...

४९. गढप्रतिभे घणा किया गढ-रोहा

५०. गयेंद मान रे मुहर ऊमौ हुनौ दुरद गति

...

५१. घड़ अहरण रतन जसै घण घायै

...

५२. घावां घड़ु खेत पड़यो वप धूमत

..

५३. घटे पूर पावस बहे रायमबंरणा चढे

...

५४. चवै भेम जैमाव घीतःइ मठ चळवळे

...

	चहुवाणा दिल्ली गयी	८१ ५.
५५.	चहुवाणां पळे चढे रिण चाचर	७५
५६.	चंद्राणि चीर चमीर न चंचलि	१३४
५७.	चालंतो कोट पयंपे चूंदो	१६
५८.	चौरंग चूरिया घर सेन चाई	५८
	जग दिणियर पाखै जिऔ	४ ५.
५९.	जुग पार पखै ग्या मुम्ह जोवनं	८४
६०.	जुग मल चोराम सुणायें जाये	४७
६१.	जुग बीता अनंत आंवतै-जातै	१०४
६२.	जै रा योल उपगार संसार ऊपर सदा	१४०
६३.	ढाहां ढोलां अर ढीचाळां	५६
	ढिग अकबर-दल दाण	७० ५.
६४.	ढीली पह आर्य राण ढीलियै	५५
६५.	तणी घघायण नेन बंध घरण सोढां तणी	७
६६.	तप करि कांइ रागी करो कांइ तीरा	१०६
६७.	तिल लिख तन हुयो तणी जद तूटे	४६
	हरक बहाली मुब पंत	७० ५.
६८.	तुम्ह मुगर तणीजतै सह कोइ समरियो	५०
६९.	त्रिजड भालि आगलि धसे साहि दाण तयो	११२
७०.	त्रिजडादथ समरथ करण साहरो	८१
	पिर नग हिदुपान	७० ५.
७१.	दल जाले सयल राग-कल दोमभि	११७
७२.	दल लापां मिली ऊकळी दोमभि	११८
७३.	दय दापी अक अक दुख दापी	१०८
७४.	दामणि कर प्रहे सासर दोखत	१३७
७५.	दिन मांचे दूद रांर ये दमगळ	११५
७६.	दिली ऊपरां राण राजसी चढियो अ दिन	११६
७७.	दिली-साह छलि उजेयो याह राग दाघने	११३
७८.	दुरंगदास सोनंग दुहुं मांचे गदियां बुजड	१२२
७९.	दुष्ट याद माती कहर साह ये देखये	१२६
	देनल देण देन काम निण दाघण...	४ ५.

८०.	घर धुज्जं गज्जै गयण घज्जै मेरि निहाव	११०
८१.	धानंतर मयंक हण सुक धावौ..	४४
	प्रम रहो रहवे धरा ...	८१ ६.
८२.	नक तीह निवाण नियळ दाय नावे ...	४४
८३.	नय कोटां तिषक नमतां निय वळि ...	४३
८४.	महीं आत्र जैतिघ जसरान्न जगतो नहीं ...	१३१
८५.	निहंसि जोध गजपति कळह कोह मांड नहीं ...	७२
८६.	पग मांडी भडां न जावौ पाळा ...	१४३
	पंकू मूछा पाण ...	४० ६.
	पक्षे नह पोवी ..	४ ६.
८७.	पड़ियौ नेजाल त्रिडे पाररिये .	३३
८८.	पड्डे धुंन डीखी सहूर सोर मांडव पड्डे ..	२८
८९.	पण ग्रहिया जेत मिलण कत्र पातां	१२
९०.	पाम रूप पतिसह संसार पंकज पगै	८२
९१.	पहिलीं सखळ स जूके पौरिस	८०
	पंलि भलै किछु भगनि पडासे	४९
	पातन जी पतिसाह ..	४० ६
९२.	पाताळ तडे वळि रह्या न पावूं	६०
९३.	पाडाइ चढे असमान पाकडं ..	८१
९४.	पिडि भीक ठीक गयण लागि पडुंछे ...	१२८
९५.	पिडि साकि पठाण परसि पुरसोतम	७३
९६.	प्रगटां पंडवेस सु-पह साचरिया ..	३७
९७.	प्रथम नेह भीनी महाक्रोध भीनी वड्डे ..	६
९८.	प्रथम मारियौ सलाहदयान कितार्ई पळे ..	१७
९९.	प्रळैकाल बीसो कहत हो अे ऊपर मिथी	१२३
१००.	बहु रावां राणां वाव विवरजित	१६
१०१.	बापीसि मामि बगवति योलै ..	३५
१०२.	बापीदा मोर कोकिना योलै ...	८१
१०३.	बावन न बळी त्य गियौ सरपस	२
	बापीने नवा बाळिश बोदा .	१४४ पी.
१०४.	बिहड ऊठियौ घुणि गिर मेर सो बदादर	१०१

१०५.	विजड़ ताप तो नमौ परमाप सांगण विधा	६३
१०६	मर सूतां नींद ऊपरै भीमा ...	७७
१०७.	भंगशाह दहेजा कुलवट भारी .	१२६
१०८.	भारथ मभि मिले दूसरी भारथ	१०७
१०९.	भिड़-भिड़ भगद्वै कोइ वीर पढ़ै भुवि	१०२
११०	मलण माण अस्तुराण रंद राण घेटीनणा ..	७६
१११	माटीनण तणौ अरि-घाह मिलतां .	६७
११२.	माटीपण नमौ मूवहर मामी	५२
११३	मिटिये निज दळ मिटत जी मधकर	३६
११४.	मिति भायां मतौ कियो मा-जाया ...	१३६
११५.	मिले घाट विखमौ कळइ छाट लोहा मिले ...	१२६
११६.	मुख साह मुहांमुहि हुकम चिह्ना	१०५
११७	मुहं किम आविये परय चैरहा मुखिस गुर	८८
११८.	मेवाड़ तणा में दीठा मांगे .	६३
११९	मांड़े घड़ सोरठ मेछ मणारन ...	६१
१२०.	मोल न आणया कोइ धीभ न मेठ्या ..	२५
	पुं फिर-फिर आदी ..	७६
१२१.	रंग रातौ चीत कउटहर राजा	४२
१२२	राह खूँके घात राजसी राउत .	१४१
१२३	राणी म-म रोइ पियो रिण-रीघल ...	५४
१२४	रिह गा रिहपाळ हुता जे राउत ...	४०
१२५.	खल समपे जु तैं मांहिया जाखा .	५
१२६.	लड़े मुडौ पनिवाह विमुश अडौ लखकरा ...	१०६
१२७.	वडै ठोड़ राठीड़ अखियात राखी चडौ	६६
१२८.	चडौ खुर सु-दतार रायसिंघ विसरामियो ...	६१
१२९	घमीनण जोय कणै-गढ पैठी ...	२२
	वरजे वाली नाम ...	७६
१३०.	घर बूडौ सादुल भूप वीकघर	१४६
१३१.	घरियाम विहंग न लहै वेसामी .	६५
१३२.	घहं करारा लोह ओरै जठे गहादर .	१११
१३३.	'वाहाइनगर घाराइ विधूसे .	११

विश्व तूही दिन वैदे

...

...

८१ ६०

१३४. चिनड़ायि अनेरा जिह्वा चैरसल

...

७८

१३५. घेरायां ल.६ विसम छळि घीकै...

...

२३

१३६. म ज ये विजौ विदया त्रिव जाणै

.

४३

१३७. सकति काइ साधना किना निज भुज सकति..

१२१

१३८. सत चार जरासंध अ.गळि स्रोम

...

३१

१३९. सरसर नदि भघण कोढ़ि बडु करिसण

..

२४

१४०. सहार लूटतौ सरय नित देस करती सख

...

६२

संमिले बारह मेघ समधि

..

...

४० वं

साळ्या हंदा साथ ...

...

.

४६

१४१. सांगण दूसाग अभनमा उदैसी...

...

७६

सांग मूंढ सहसी लको

...

...

७० व,

१४२. सिमियाणै कलै कियौ जिम-साकी

...

८७

१४३. सिर सपति समदे निहसै नित प्रति

..

१४

१४४. सुरताण तया गाय र या सगहे

...

११६

१४५. सुरताण हुच। भेमीत सपेखे ...

...

...

६८

हपलेपौ गर-लोक

...

...

४६

२ वीर-नामानुक्रमणिका

१.	अनौ राजयोगीत, भालौ (घडो सादही, मेवाड)	३३
२.	अनूपसिंघ करणसिंघीत, राठौड़ (धीकानेर)	१२३
३.	अनूपसिंघ पिरागदासीत, भाटी ...	१३९
४.	अमरसिंघ गजसिंघीत, राठौड़ (नागौर) ...	१४-१८
५.	अमरसिंघ प्रतापसिंघीत, सीसौदियौ (मेवाड)	७६-८१
६.	अमरौ वरुणाणमलौत, राठौड़ ...	६२
७.	अरजण धीटलदासीत, गौड ...	१०५
८.	उदेसिंघ हरनाथीत, राठौड़ करमसिंघीत ...	१२७
९.	करण धीजायत, संधिधौ ...	४४
१०.	करणसिंघ अमरसिंघीत, सीसौदियौ (मेवाड)	९१
११.	करणसिंघ सुरसिंघीत, राठौड़ (धीकानेर) ...	११०
१२.	कन्नौ रायमलौत, राठौड़ ...	७५-७६
१३.	कांचल रिद्धमलौत, राठौड़ ...	२०
१४.	किसनसिंघ रायसिंघीत, राठौड़ (नांखू, धीकानेर)	२६
१५.	किसनाथती वरुणाही (अमरकौ) ...	१०७-१०८
१६.	कुंमकाण मोकळीत, सीसौदियौ (मेवाड)	१७-१८
१७.	कैतरीसिंघ बैरसलौत, कछयाही ...	६०
१८.	खंगार रायपालौत, राठौड़ सींधल ...	११५
१९.	खंगार सोढी ...	१३४
२०.	गहड़ हमीरीत, यादव ...	३४
२१.	गांगी बाघायन, राठौड़ (मारवाड)	३५
२२.	गोकळदास मनोहरदासीत, राठौड़ खांपायत ...	१०४
२३.	गोपदास मूळायत, चौबरी (जाट)	१२६
२४.	घंढ्रमेष माखदेवीत, राठौड़ (मारवाड)	७१
२५.	खांदी वीरमदेवीत, राठौड़ मेड़तियौ ...	५८-५७
२६.	खूंडी छायायत, सीसौदियौ ...	१६
२७.	खूंडी वीरमदेवीत, राठौड़ (मारवाड)	१३
२८.	जगतसिंघ करणसिंघीत, सीसौदियौ (मेवाड)	१२
२९.	जगमाल जैसिंघदेवीत, चौदाण सांचीरी ...	५१
३०.	जसमावे हाथी (मारवाड) ...	११५

३१.	जसठप मूँघड़ो	१३२
३२.	जसवंत सिंघीन, चौहाण सोनिगरी	.	८४ ८१
३३.	जसवंतसिंघ गजसिंघीत, राठौड़ (मारवाड़)	११३-११४	
३४.	जसो हरधमलौत, जाड़ेचो	..	४६
३५.	जैचंद, सोलंकी...	...	१३६
३६.	जैनमाल सलखावत, राठौड़	..	१०
३७.	जैनसो लखकरणीत, राठौड़ (बीकानेर)	.	३१
३८.	जैमल वीरमदेवीत राठौड़ मेड़तियो		४५-४७
३९.	जैसिंघ महासिंघीत, कछवाही (घांनेर)	...	१०६
४०.	जैसो कगटौत, सरयहियो	...	२१
४१.	जोधो रिद्धमलौत, राठौड़ (मारवाड़)	...	१६
४२.	झरडो घुहायन, राठौड़ घांघल	...	=
४३.	दलपतसिंघ रायसिंघीत, राठौड़ (बीकानेर)		८२
४४.	दलपतसिंघ सगमायन, सांसोदियो	...	६३
४५.	दुलगादास आसकरणीत, राठौड़	...	१२२
४६.	दुदो जोधावत, राठौड़ मेड़तियो	.	२५
४७.	देवीदास जैतायन, राठौड़	...	५३
४८.	दीनतपान नारायणदासीत, राठौड़	...	१३७
४९.	दीलतसिंघ सुरनाणीत, भाटी	..	१३८
५०.	नरी अमुरायत, चारण सोदी	...	१२०
५१.	नाहरपान किसनदासीत, चौहाण सांचीरी	..	१३०
५२.	पदमसिंघ करणसिंघीत, राठौड़	... १२५-१२५	
५३.	पचायण, पमार	...	५२
५४.	पाबू घांघलौत, राठौड़	...	६-७
५५.	प्रतापसिंघ उदैसिंघीत, भीसोदियो (मेवाड़)	६३ ७०	
५६.	प्रतापसिंघ सुरनाणीत, भाटी	...	११६
५७.	प्रिदीराज जैनायन, राठौड़ (यगड़ी, मारवाड़)		५४
५८.	पदुतिसिंघ विरगदासीत, भाटी	...	१३६
५९.	पट्ट गोवाळदासीत, राठौड़ घांपावत	... १०८-१०३	
६०.	भीम हंगरीत, भाटी पाट्ट	...	७७
६१.	भीम हरराजौत, भाटी (जैतलमेर)	...	७४
६२.	भोजराज सादावत, राठौड़ कपावत	...	३७

६३.	महोनाथ सचखायत, राठौड़ (मारवाड़) ..	११
६४.	महाराज अलैराजीत, राठौड़ ..	२७
६५.	महेस बल्ल्याणमनोहर, सांघडी ..	३८-५०
६६.	मानसिंघ भगवंतदासौत, पछ्वाही (आंबेर) ..	७-७३
६७.	मानसिंघ, राठौड़ ..	१४०
६८.	रनन महेमदासौत, राठौड़ (रनलाम) ..	११२
६९.	राजसिंघ जगतसिंघात, सीसौदियौ (मेवाड़) ..	११७-११६
७०.	राजसी, पट्टिहार ..	१४१
७१.	रायमल्ल फूमकरणीत, सीसौदियौ (मेवाड़) ..	२६
७२.	रायसिंघ कल्याणमलोत, राठौड़ 'वीकानेर' ..	६०-६१
७३.	रायसिंघ मानसिंघात, भाली ..	४०
७४.	रायल लालावत, जाड़ेयौ ..	४५-४७
७५.	रिद्धमल्ल चूडावत, राठौड़ (-मारवाड़) ..	१४-१५
७६.	लाजौ फूलाणी, यादव समौ ..	५
७७.	लालसिंघ, राठौड़ (बड़ली) ..	१३१
७८.	वीकी जोधावत, राठौड़ (वीकानेर) ..	२२-२३
७९.	वीजौ दूदावत, सरयदियौ ..	४२-४३
८०.	वीठलदास अचलावत, चौदाण सांचौरी ..	१२८-१२९
८१.	वीदी जोधावत, राठौड़ ..	२४
८२.	वैणीदास, राठौड़ ..	१४०
८३.	वैरसल खंगारीत, पछ्वाही ..	८५-८६
८४.	वैरसल मिथीराजौत, राठौड़ जैतावन (बगड़ी) ..	७८
८५.	सत्रसात्र गोपीनाथौत, चौदाण हाडी (बूंदी) ..	११२
८६.	सज्जौ तीडावत, राठौड़ (मारवाड़) ..	१०
८७.	सादूलसिंघजी गंगासिंघात, राठौड़ (वीकानेर) ..	१५६
८८.	सादूल सांमतसोहीत, चौदाण सांचौरी ..	१०६
८९.	सांगी, मैणौ ..	१४२
९०.	सांगी रायमलोत, सीसौदियौ (मेवाड़) ..	१८-३१
९१.	सिवाजी सादजीयोत, ओसलौ मराठो ..	१२१
९२.	सिगी, घाढेब ..	४१
९३.	सीहौ, चौदाण निवाण ..	१४१
९४.	सुजाणसिंघ स्यामसिंघात, कल्याही सेनावत ..	१३१

૬૪.	મેળી સુપ્રાધન, રાઠોડ	૩૪
૬૬	મોનંગ પીઠલ્લદાસોત, રાઠોડ ચાંપાવત			૧૨૨
૬૭	દમોર અફસીયોત, સીસૌદિયો (મેવાડ)	.		૬
૬૮	હરપાલ દેવરાજોત, રાઠોડ	.		૧૪૪
૬૯	દરોરામ મોવાવત, રાઠોડ ઝડડ	.		૧૪૪
૧૦૦	હાથીસિંઘ ગાપાલદાસોત, રાઠોડ ચાંપાવત	.		૮૧

३ वीर-जाति-नामानुक्रमणिका

कळवाहा	...७२, ७३, ८७, ८८, ८९, ९०, १०६, १३१	
सेबायत	...	१३१
कळवाही राणी	...	१०७, १०८
गद्दोज	६, १६, १७, १८, २६, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७९, ८०, ८१, ९१, १२२, १२३, ११७, ११८, ११९, १२१	
गौड	...	१०५
घारण, सौदा	...	१२०
चौहाण	२१, ८४, ८५, १०६, ११२, १२८, १२९, १३०, १४३	
निरघाण	...	१४३
सांचौरा	२१, १०९, १२८, १२९, १३०	
सोनिगरा	...	८४, ८५
हाडा	...	११२
हाडी राणी	...	११५
चौधरी (जाड)	...	१२६
भाजा (मवघाया)	...	३३, ५०
पण्डित	...	१४१
पमार	...	३८, ३९, ४०, ४२, १३४
सांखळा	...	३८, ३९, ४०
सोढा	...	१३४
भोंसळा मराठा	...	१२१
मुंघडा	...	१३२
मैयण	...	१४२
पादव	४, २१, ३४, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ७४, ७७, ११६, १३८, १३९	
जादेचा (हाडा)	...	४५, ४६, ४७, ४९
भाटी	...	७४, ७७, ११६, १३८, १३९
खरघडि	...	११, ४२, ४३, ४४

राठौड़ ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १४, १५ १९, २०, २२, २३,
२४, २५, २७, ३५ ३६, ३७, ४१, ५३, ५४, ५५ ५६, ५७, ५८,
५९, ६०, ६१, ६२, ७१, ७५, ७६, ७८, ८२, ८३, ८६,
९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३,
१०४, ११०, १११, ११३, ११४, १२२, १२३, १२४,
१२५, १२६, १३३ १३५, १३७, १४०, १४४, १४५, १४६

ऊहड़	.	..	१४५
कामसियौत	१२७ -
बांपावत ८३, १००—१०४, १२९	
जैमावत	५३, ५४, ७८
जोधा	२२-२५, ३५, ७१, ७५, ७६, ८४-८६, १११, ११३, ११४		
घांघन	६, ७, ८
मेरुतिपी	२५, ५५—५९
रिहमजीन	१६, २०, २७
रूपचत ३७
वाढेच	४१
वीका	३६, ६०—६२, ८२, ८६, ११०, १२३, १२४, १२५, १४६		
सींघल १३५
घाढेल (राठौड़) ४१
सीसौदिया (देखो गदखौत	
खोळंकी	१३६

१ कवि-नामानुक्रमणिका

१.	अनोपसिंघ सांदू...	...	१२७
	आढी, किसनी	१६
	, दुरसी ..	६१, ६४, ७५, ८०	
	भासियी, मूठौ	१
	, दूवी	१४७
	, पीयौ	६८
	, रामौ	१३२
	, घांकीवाम ..	६, १२२	
२.	आसौ बारहट	३४
३.	आसौ सांदाइच	१३३
४.	ईसरदास बारहट ..	४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०,	
	उपाध्याय धर्मवर्धन	१२१	
५.	कल्याणदास जादावत	१४२
६.	कल्याणदास सौदी	९१
	कवियौ, रामनाथ	७ दूहा
७.	किसनी आढी	१६
८.	कैसीदास गाढण	९४, ९५
	सिद्धिपौ, तीकमदास	१२८
९.	खेतसी जाडस	१०६
	गाढण, कैसीदास ..	८४, ८५	
	, गोरधन	१२६
	, माघौदास	१७
१०.	गिरवरदान	७
११.	गोपाल चरदावत मीमण	७२, ७३
१२.	गोरधन गाढण	१२६
१३.	गोरधन बोगसी	६२, १०७, १०८
१४.	चतुरौ बारहट	११०
१५.	जगौ सांदू	१४०
१६.	जमणौ सौदी	३१
१७.	मूठौ भासियौ	१
१८.	ठाकुरसी बोगसी	७८

१९.	ठाकुरसी सामोर जगनाधीत	...	८४
२०.	तीकमदास खिड़ियौ	...	१२८
२१.	दुरसौ आढी	६१, ६४, ७० दूहा-क०, ७५, ८०	
२२.	दूदौ आसियौ	...	१४४
२३.	दूदौ बारहट	...	१३
२४.	धरमौ	...	१५
२५.	धर्मचर्धन, उपाध्याय	...	१२१
२६.	नरोत्तमदास स्वामी	...	१४६
२७.	पीयौ आसियौ	...	६८
२८.	पूरी (पूरणदास) महियारियौ	१०६, १११	
२९.	प्रिधीराज राठीढ़..	६६, ७० दूहा, ७७, १३७	
	-बारहट, आसौ	...	३४
	, ईसरदास...	४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४९, ५०	
	, चतुरौ	...	११०
	, दूदौ	...	१३
	, महेश	...	७६
	, रतनसी	...	१०४
३०.	पाऊ सौदौ	...	९
	योगसी, गोरधन	६६, १०७, १०८	
	, ठाकुरसी	...	७८
३१.	मरमौ रतनू	...	२७
	मोजग, सोहिख	...	७४
	महियारियौ, पूरी	१०६, १११	
३२.	महेश बारहट	...	७६
३३.	माधौदास गाढण	...	९७
३४.	माछौ सांदू	...	८१
	मीसण, गोपाल पारदाधत	७२, ७३	
३५.	मूळी पीरनिधौ	...	१३८
३६.	रतनमी बारहट	...	१०४
	रतनू, मरमौ	...	२७
३७.	राजसिध, महाराण	१२९ क. (२)	

	राठौड़, प्रियीराज	...	६६, ७० दूहा, ७७, १२७
३८	रामनाथ कवियों ..	.	७ दूहा
३९.	रामों आसियों	.	१३२
४०.	रूपसी लाखस ..		८६
	लाखस, खेतसी	.	१०६
	, रूपसी	..	८६
४१.	लिखमीदास व्यास	...	१२६
४२	बांकीदास आसियों	.	६, १२२
	पीरंभियों, मूळी	..	१३८
	व्यास, लिखमीदास	...	१२९
	सामोर, ठाकुरसी	.	८४
	सांढाच, आली	.	८३
	सांढू, अनोपसिध	...	१२७
	, जमों ..	.	१४०
	, माली .	..	८१
४३.	सुरताण		४ दूहा - खंद
४४.	लोहिख भोजग .	.	७४
	सीदों, कन्यादास	.	९१
	, जमणी	.	३१
	, पारू	९
४५.	हरसूर (हरिसूर)	.	१४, १९, २४, १४१

श्री सादूल प्राच्य ग्रंथमाला

‘गीत-मंजरी’ पर प्राप्त

कुछ सम्मतिषों के उद्धरण

"डिंगल भाषा में गीत एक अनोखी और चमत्कारी वस्तु है और वे हजारों की संख्या में मिलते हैं परन्तु अब तक उनका प्रकाशन नहीं हुआ। आपने टिप्पण सहित ४८ गीत प्रकाशित किये जो पीकानेर से संबंध रखते हैं। यह पहिला ही गीत-संग्रह है, जिसको प्रकाशित कर आपने डिंगल भाषा की अनुपम सेवा की है। इसके लिए आपको तथा ग्रंथमाला के संपादन-मण्डल को मैं हार्दिक यथाई देता हूँ गीतों का संकलन कुशलता-पूर्ण और सुन्दर हुआ है।"

—गौरीशंकर हीराचंद ओझा।

"It contains 48 rare original songs and will be highly liked and appreciated not only by the Rajasthanis public, but will be welcome by the Hindi and Dingal loving people abroad as well."

P HARI NARAYAN SHARMA,
Vidyabhushan, Jaipur.

"Apart from their philological and historical importance, which is very great indeed, the *Gitas* selected are of immense literary value, and represent the true gems of the Dingal literature. The notes supplied are excellent, as is the brief introduction."

M. L. MENARIA,
Gangore Ghat, Udaipur.

‘Thankfully received a copy of Git Manjari
Which student of medieval literatures and language
of North India would fail to welcome a Series that
proposes to publish Rajasthani and Hindi classics ”

HARI VALLABH BHAYANI,
Bharatiya Vidyabhawan, Bombay

“ The collection has been well done and
the idea of publishing texts in old Rajasthani and
Hindi is as admirable as timely

V S AGRAWALA,
Provincial Museum Lucknow

“The idea of publishing the Rajasthani songs is
indeed welcome, and we eagerly await many such
volumes. These songs are surcharged with the
spirit of martial traditions, and in addition they are
valuable specimens of post Apabhramsa linguistic
stage

A N UPADHYE,
Kolhapur